सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number :
F.2 (P-2) Press/2023

परिवहन विशेष

www.newsparivahan.com
वर्ष 02, अंक 50, नई दिल्ली । गुरुवार, 02 मई 2024, मूल्य ₹ 5, पेज 8
देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र

आज का सुविचार

लड़ाई लड़ने वाला तो विजय प्राप्त करता है परंतु दूर से देखने वाला तो सिर्फ तालियां बजाता रह जाता है।

03 भारत देश की जेलों में बंद कैदी चुनाव तो लड़ सकते हैं पर वोट नहीं दे सकते,
06 पैसे और राजनीति का इश्क
08 पंतजलि आयुर्वेद और दिव्य फार्मेसी के लगभग 14 उत्पादों के लाइसेंस रद्द

वित्त वर्ष 2025 में नेशनल हाईवे का निर्माण घटकर 31 किमी प्रति दिन हो जाएगा, अध्ययन में दावा

संजय बाटला

राष्ट्रीय राजमार्गों (नेशनल हाईवे) के निर्माण की रफ्तार में वित्त वर्ष 24 में तेजी देखी गई, जो 34 किमी प्रति दिन तक पहुंच गई। हालांकि यह वित्त वर्ष 21 में दर्ज किए गए 37 किमी प्रति दिन से कम है।

नई दिल्ली। केयरएज रेटिंग ने भारतीय सड़क और राजमार्ग क्षेत्र की मौजूदा स्थिति पर रोशनी डाला है। जो परियोजना निष्पादन की गति में गिरावट की ओर इशारा करता है। खासकर परियोजनाओं को स्वीकृत करने के तरीके और निर्माण की रफ्तार में। वित्त वर्ष 24 में नेशनल हाईवे के निर्माण की रफ्तार में तेजी देखी गई, जो 34 किमी प्रति दिन तक पहुंच गई, हालांकि यह वित्त वर्ष 21 में दर्ज किए गए 37 किमी प्रति दिन से कम है।

हालांकि, निर्माण में आने वाली चुनौतियों और बढ़ती परियोजना जटिलताओं के कारण वित्त वर्ष 25 में निर्माण की गति में 7 से 10 प्रतिशत की गिरावट आने की उम्मीद है। जो घटकर लगभग 31 किमी प्रति दिन हो जाएगी। इसकी वजह से वित्त वर्ष 24 में 12,350 किमी से राष्ट्रीय राजमार्ग निर्माण घटकर वित्त वर्ष 25 में 11,100 से 11,500 किमी हो जाएगा। रिपोर्ट में इस मंदी में योगदान करने वाले प्रमुख कारकों के रूप में बढ़ती प्रतिस्पर्धा और बढ़ती परियोजना जटिलताओं को बताया गया है।

सरकार की बुनियादी ढांचा विकास की प्रतिबद्धता के बावजूद, वित्त वर्ष 24 में पिछले वित्त वर्ष की तुलना में परियोजना स्वीकृति में उल्लेखनीय कमी आई, जो 31 प्रतिशत कम है। यह गिरावट उम्मीद से कहीं ज्यादा थी। खासतौर पर भारतमाला परियोजना के तहत परियोजनाओं के लिए कैबिनेट से संशोधित लागतों की लंबित मंजूरी के कारण।

विधायी चुनावों और उसके बाद आचार संहिता लागू होने से परियोजना स्वीकृति में और कमी आई।

BOT-HAM (हाइब्रिड एन्युटी मॉडल) परियोजनाओं को स्वीकृति देने का पसंदीदा तरीका बना रहा। जो वित्त वर्ष 21-वित्त वर्ष 24 के दौरान स्वीकृत कुल परियोजनाओं का लगभग 55 प्रतिशत है।

हालांकि, ऐसी परियोजनाओं के लागू होने में खासी देरी देखी गई है।

मार्च 2020 के बाद स्वीकृत लगभग एक तिहाई परियोजनाएं को तीन महीने की दया अवधि (ग्रेस पीरियड) से ज्यादा की देरी का सामना करना पड़ रहा है, जो तकरीबन 4-6 महीने हो गई है। इन परियोजनाओं की राशि 1.50 लाख करोड़ रुपये है।

1 अप्रैल तक NH-HAM परियोजनाओं का एक अन्य महत्वपूर्ण हिस्सा, जिसका कुल बिड प्रोजेक्ट कॉस्ट (BPC) मूल्य 40,000 करोड़ रुपये है, अभी भी एक वर्ष से ज्यादा समय से नियत तारीख जारी होने का इंतजार कर रहा है।

ग्रीनफील्ड एक्सप्रेसवे और हाईवे की घोषणा ने भूमि अधिग्रहण की चुनौतियों को बढ़ा दिया है, जिससे नियत तारीख मिलने में देरी हो रही है।

इसके अलावा, परियोजनाओं के दायरे से परे, दो साल की समान निष्पादन अवधि ने परियोजना में देरी को बढ़ा दिया है।

इन वजहों ने परियोजना पूरा करने के चक्र को बढ़ाकर लगभग साढ़े 3 से 4 वर्ष कर दिया है। जिसके कारण क्षेत्र में निष्पादन की रफ्तार कमजोर देखी गई है।

चुनौतियों का समाधान करने के लिए, सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्रालय (MoRTH) ने BOT टोल रियायतों को नया रूप दिया है।

केयरएज रेटिंग का अनुमान है कि आने वाले समय में परियोजनाओं को स्वीकृत करने की प्राथमिकता ईपीसी से एचएएम और टोल परियोजनाओं में स्थानांतरित हो जाएगी। जिससे भविष्य में परियोजनाओं को स्वीकृत करने में ईपीसी परियोजनाओं की हिस्सेदारी में उल्लेखनीय कमी आएगी, जो लगभग 25-30 प्रतिशत तक रहने की संभावना है।

इस बदलाव से निर्माण की गुणवत्ता पर ध्यान केंद्रित करते हुए NHAI के लिए वित्त पोषण की आवश्यकता को कम करने की उम्मीद है।

चालू हो रहा हैं दिल्ली को कनेक्ट करने के लिए एक और एक्सप्रेसवे. मात्र 2 घंटे में गर्मी से पहुँच जाएँगे ठंडे पहाड़ो में

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। अगर आप दिल्ली या आसपास के किसी शहर में रहते हैं और देहरादून या उत्तराखंड के अन्य शहरों की यात्रा करते हैं? तो आपके लिए एक अच्छी खबर है! दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे का पहला चरण इस महीने से चालू होने वाला है। यह एक्सप्रेसवे न केवल दिल्ली और देहरादून के बीच की दूरी को कम करेगा, बल्कि पश्चिमी उत्तर प्रदेश के कई शहरों को भी बेहतर कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। कुल लंबाई: 210 किलोमीटर, शुरूआती बिंदु: दिल्ली (एनएच-58), समाप्ति बिंदु: देहरादून (एनएच-72), लेन: 4 लेन (दोनों तरफ दो), **अनुमानित गति:** 120 किलोमीटर प्रति घंटा। **मुख्य लाभ:** दिल्ली और देहरादून के बीच यात्रा का समय 2.5 घंटे से कम हो जाएगा। मेरठ, गाजियाबाद, हापुड़, मुजफ्फरनगर, बिजनौर जैसे पश्चिमी यूपी के शहरों को बेहतर कनेक्टिविटी मिलेगी। व्यापार और पर्यटन को बढ़ावा मिलेगा। प्रदूषण कम होगा क्योंकि वाहन कम दूरी तय करेंगे। **टोल:** अभी टोल की दरों का ऐलान नहीं हुआ है। दिल्ली-देहरादून एक्सप्रेसवे को तीन चरणों में बनाया जा रहा है। **पहला चरण:** दिल्ली से मेरठ (58 किलोमीटर) – यह चरण इस महीने से चालू होने वाला है। **दूसरा चरण:** मेरठ से हरिद्वार (84 किलोमीटर) – यह चरण 2025 के अंत तक पूरा होने की उम्मीद है। **तीसरा चरण:** हरिद्वार से देहरादून (68 किलोमीटर) – यह चरण 2026 तक पूरा होने की उम्मीद है।

उत्तर पूर्वी दिल्ली के ज्योति नगर क्षेत्र में आटो चालक ने की ट्रैफिक पुलिस एएसआई से मारपीट...

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। उत्तर-पूर्वी दिल्ली के ज्योति नगर इलाके में ट्रैफिक पुलिस के एक एएसआई से मारपीट का मामला सामने आया है। पीड़ित एएसआई मुनिंदर कुमार (56) ने एक ऑटो की नंबर प्लेट को लेकर चालक से सवाल किया था। बाद में **वह नंबर प्लेट का फोटो खींचने लगे तो आरोपी ने उन पर हमला कर दिया।** हाथापाई करने के बाद आरोपी ने उन पर ऑटो चढ़ाने का प्रयास किया। इसके बाद पीड़ित का मोबाइल छीनकर आरोपी ने भागने का प्रयास किया। दूसरे साथी की मदद से पीड़ित ने आरोपी सतबीर सिंह (53) को काबू किया। बाद में ज्योति नगर थाने में सरकारी काम में बाधा पहुंचाने और ड्यूटी के दौरान हमला करने का मामला दर्ज कर आरोपी को गिरफ्तार कर लिया गया।

पुलिस के मुताबिक मुनिंदर कुमार लोन गोल चक्कर के पास तैनात थे। इनके साथ हवलदार हरीश भी ड्यूटी पर था। सुबह करीब 8.05 बजे मुनिंदर ने देखा कि एक ऑटो की पीछे वाली नंबर प्लेट पर चालक ने चुटिया डाली हुई थी जिसकी वजह से नंबर छिपा हुआ था। मुनिंदर ने इसके बारे में चालक से पूछा तो वह भड़कने लगा। बाद में एएसआई ने अपने मोबाइल से ऑटो का फोटो खींचना शुरू कर दिया। इस बीच चालक भड़क गया और मुनिंदर से हाथापाई करने लगा। मारपीट करने के बाद आरोपी ने ऑटो स्टार्ट कर वहां से भागने का प्रयास किया। मुनिंदर ने उसे रोकने का प्रयास किया तो आरोपी ने उन पर ही ऑटो चढ़ाने की कोशिश की। उन्होंने किसी तरह खुद को बचाया। आरोपी ने उनका मोबाइल भी छीनने का प्रयास किया।

सड़क सुरक्षा पाठशाला : नाइट्रोजन से भरे टायरों के ग्रीष्मकालीन लाभ

परिवहन विशेष न्यूज

जैसे-जैसे तापमान बढ़ता है और सड़कें रोमांच के लिए बढ़ती हैं, यह सुनिश्चित करना सर्वोच्च प्राथमिकता बन जाती है कि आपका वाहन गर्मियों की यात्राओं के लिए तैयार है। जबकि कई लोग तेल परिवर्तन, शीतलक स्तर और एयर कंडीशनिंग पर ध्यान केंद्रित करते हैं, टायर रखरखाव एक पहलू है जिसे अक्सर अनदेखा किया जाता है। विशेष रूप से, टायर मुद्रास्फीति गैस - नाइट्रोजन - का विकल्प महत्वपूर्ण लाभ प्रदान कर सकता है, खासकर चिलचिलाती गर्मी के महीनों के दौरान।

नाइट्रोजन, एक स्थिर और अक्रिय गैस, अपने कई लाभों के लिए टायर मुद्रास्फीति में लोकप्रियता हासिल कर रही है, खासकर इष्टतम टायर दबाव बनाए रखने में। यहां बताया गया है कि जब पारा चढ़ता है तो नाइट्रोजन से भरे टायर एक बुद्धिमान विकल्प क्यों होते हैं:

लगातार दबाव: नाइट्रोजन का एक प्राथमिक लाभ इसकी स्थिरता है। नियमित हवा के विपरीत, जिसमें नमी और अन्य गैसें होती हैं, नाइट्रोजन तापमान में उतार-चढ़ाव की परवाह किए बिना लगातार दबाव बनाए रखता है। गर्मियों में, चूंकि गर्मी हवा के अणुओं का विस्तार करती है, इसलिए नाइट्रोजन से भरे टायरों में दबाव में उतार-चढ़ाव की संभावना कम होती है, जिससे टायर का इष्टतम प्रदर्शन और ईंधन दक्षता सुनिश्चित होती है।

कम ऑक्सीकरण: नियमित हवा में मौजूद ऑक्सीजन, टायर सामग्री के साथ प्रतिक्रिया कर सकती है, जिससे ऑक्सीकरण और गिरावट हो सकती है। नाइट्रोजन, निष्क्रिय होने के कारण, टायर के घटकों के साथ प्रतिक्रिया नहीं करता है, जिससे संक्षारण का खतरा कम हो जाता है और टायर का जीवन बढ़ जाता है। यह गर्मियों के दौरान विशेष रूप से फायदेमंद होता है जब उच्च तापमान रासायनिक प्रतिक्रियाओं को तेज करता है, जिससे संभावित रूप से टायर की उम्र बढ़ने की गति तेज हो जाती है।

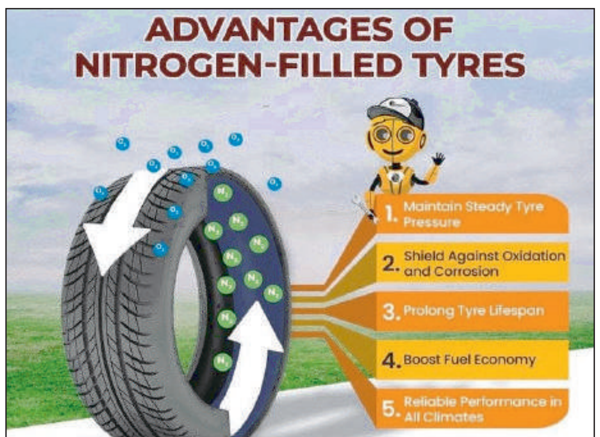

बेहतर ईंधन दक्षता: इष्टतम ईंधन दक्षता के लिए उचित टायर दबाव महत्वपूर्ण है। नाइट्रोजन से भरे टायर लंबे समय तक दबाव बनाए रखते हैं, जिससे बार-बार टॉप-अप की आवश्यकता कम हो जाती है। लगातार टायर का दबाव यह सुनिश्चित करता है कि आपका वाहन अधिक कुशलता से चलता है, जिससे गर्मियों की लंबी सड़क यात्राओं के दौरान पंप पर बचत होती है।

बेहतर सुरक्षा: सुरक्षित ड्राइविंग के लिए पर्याप्त टायर दबाव आवश्यक है, खासकर गर्म गर्मी की सड़कों पर जहां कम मुद्रास्फीति के कारण टायर फटने की घटनाएं अधिक होती हैं। नाइट्रोजन से भरे टायर लगातार दबाव बनाए रखकर, वाहन की समग्र स्थिरता को बढ़ाकर और दुर्घटनाओं की संभावना को कम करके फटने के जोखिम को कम करते हैं।

टायर की दीर्घायु: दबाव के नुकसान को कम करने और ऑक्सीडेटिव क्षति को कम करके, नाइट्रोजन से भरे टायरों का जीवनकाल आमतौर पर नियमित हवा से भरे टायरों की तुलना में लंबा होता है। हालाँकि प्रारंभिक निवेश थोड़ा अधिक हो सकता है, विस्तारित टायर जीवन के परिणामस्वरूप दीर्घकालिक बचत हो सकती है और पर्यावरणीय प्रभाव कम हो सकता है।

पर्यावरणीय लाभ: टायर मुद्रास्फीति के लिए नाइट्रोजन एक पर्यावरण अनुकूल विकल्प है। इसकी निष्क्रिय प्रकृति का मतलब है कि यह ओजोन क्षय या ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन में योगदान नहीं देता है। इसके अतिरिक्त, टायर बदलने की आवृत्ति को कम करके, नाइट्रोजन से भरे टायर टायर निर्माण और निपटान से जुड़े पर्यावरणीय प्रभाव को कम करने में मदद करते हैं।

नाइट्रोजन से भरे टायर कई लाभ प्रदान करते हैं, खासकर गर्मियों के महीनों के दौरान जब तापमान बढ़ जाता है और सड़क की स्थिति अधिक मांग वाली हो जाती है। लगातार टायर दबाव बनाए रखने से लेकर सुरक्षा और ईंधन दक्षता बढ़ाने तक, नाइट्रोजन मुद्रास्फीति के फायदे निर्विवाद हैं। हालाँकि प्रारंभिक लागत थोड़ी अधिक हो सकती है, प्रदर्शन, सुरक्षा और पर्यावरणीय प्रभाव के संदर्भ में दीर्घकालिक लाभ इसे किसी भी वाहन मालिक के लिए एक सार्थक निवेश बनाते हैं जो अपने ग्रीष्मकालीन रोमांच का अधिकतम लाभ उठाना चाहता है।

रिदमशाला : जीवन की लयबद्ध गतिः इसकी महत्वपूर्ण भूमिका को समझना : अंकुर शरण

दिल की स्थिर धड़कन से लेकर हमारी वाणी की लय तक, लय हमारे अस्तित्व के हर पहलू में व्याप्त है। लेकिन वास्तव में लय क्या है, और यह हमारे जीवन में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका क्यों निभाती है?

इसके मूल में, लय नियमित और बार-बार होने वाले क्रम में होने वाली ध्वनियों या गतिविधियों का एक पैटर्न है। यह संगीत, नृत्य, कविता, प्रकृति और यहां तक कि हमारी दैनिक दिनचर्या के उतार-चढ़ाव में भी पाया जा सकता है। लय हमारे अनुभवों को संरचना, सुसंगतता और पूर्वानुमेयता प्रदान करती है, समय बीतने के दौरान हमारा मार्गदर्शन करती है।

प्रकृति लय में घूमती है, चाहे सूरज हो या घड़ी, हम लय से घिरे हुए हैं और इसका सबसे अच्छा उदाहरण है सांस लेना भी लय का सबसे अच्छा उदाहरण है। रिदमशाला के माध्यम से, हम अपने जीवन में लय के महत्व को साझा कर रहे हैं और विभिन्न पहलों, संगीत, कार्यशालाओं, गतिविधियों, सड़क सुरक्षा अभियान, साइकिल की सवारी के माध्यम से, हम अपने समुदाय के साथ एक सुंदर संबंध बनाते हैं, जिन्हें लय का हिस्सा बनने की आवश्यकता है।

संगीत में, लय रीढ़ की हड्डी के रूप में कार्य करती है, जो किसी टुकड़े की गति और मीटर को निर्धारित करती है। यह गति पैदा करता है, श्रोता को आगे बढ़ाता है और भावनात्मक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त करता है। इलेक्ट्रॉनिक नृत्य संगीत की

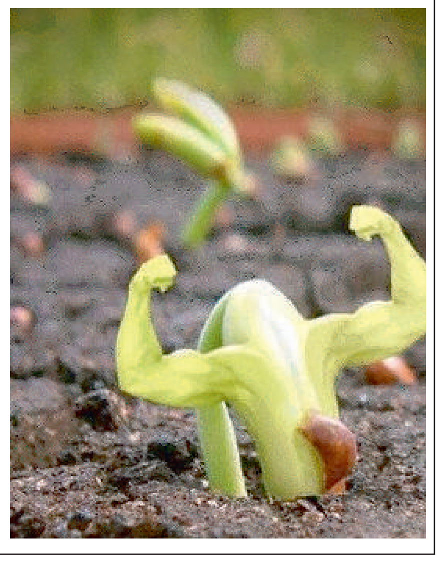

स्पंदित लय से लेकर जैज़ की समन्वित धुनों तक, लय में हमें शारीरिक और भावनात्मक रूप से प्रेरित करने की शक्ति है।

संगीत से परे, लय हमारे आस-पास की दुनिया के बारे में हमारी धारणा को प्रभावित करती है। जैसे ही हम चलते हैं हमारे कदमों की लयबद्ध पैटर्न, संचार करते समय हमारे भाषण की लय, और खेल में एथलीटों की समकालिक गतिविधियां, सभी क्रियाओं के समन्वय और सुसंगतता बनाए रखने के लिए लय पर निर्भर करती हैं।

प्रकृति में, ऋतुओं के चक्र, ज्वार-भाटा का उतार-चढ़ाव और तितली के पंखों की फड़फड़ाहट में लय अंतर्निहित है। ये प्राकृतिक लय न केवल पर्यावरण को आकार देते हैं, बल्कि हमारे स्वयं के जैविक लय को भी प्रभावित करते हैं, जैसे सर्कैडियन लय, जो नींद-जागने के चक्र को नियंत्रित करते हैं, और अल्ट्राडियन लय, जो आराम और गतिविधि के छोटे चक्रों को नियंत्रित करते हैं।

मनोवैज्ञानिक रूप से, लय का हमारे मनोदशा, अनुभूति और व्यवहार पर गहरा प्रभाव पड़ता है। अध्ययनों से पता चला है कि लयबद्ध संगीत सुनने से फोकस बढ़ सकता है, तनाव कम हो सकता है और शारीरिक प्रदर्शन में सुधार हो सकता है। इसी तरह, नृत्य या ढोल बजाने जैसी लयबद्ध गतिविधियों में शामिल होने से सामाजिक जुड़ाव, रचनात्मकता और आत्म-अभिव्यक्ति को बढ़ावा मिल सकता है।

साहित्य और कविता में, लय भाषा की संगीतमयता में योगदान देती है, कवि पाठकों के साथ गूंजने वाली गीतात्मक रचनाएँ बनाने के लिए मीटर, छंद और दोहराव जैसे विभिन्न लयबद्ध उपकरणों का उपयोग करते हैं।

इसके अलावा, लय हमारे तकनीकी परिदृश्य में व्याप्त है, कंप्यूटर प्रोसेसर के सटीक समय से लेकर एल्गोरिदम के लयबद्ध पैटर्न तक जो हमारे डिजिटल इंटरैक्शन को नियंत्रित करते हैं। यहां तक कि हृदय की मांसपेशियों की कोशिकाओं के लयबद्ध संकुचन द्वारा नियंत्रित हमारी दिल की धड़कन भी जीवन को बनाए रखने में लय की मौलिक भूमिका का उदाहरण देती है।

संक्षेप में, लय वह धागा है जो हमारे अस्तित्व के ताने-बाने को बुनता है, हमें एक-दूसरे से और हमारे आस-पास की दुनिया से जोड़ता है। यह हमारे पर्यावरण का उत्पाद भी है और एक शक्ति भी है जो हमारे अनुभवों को आकार देती है। लय को उसके सभी रूपों में अपनाकर, हम जीवन की अंतर्निहित व्यवस्था और सुंदरता के प्रति गहरी सराहना पैदा कर सकते हैं।

अगर आपको ट्रैकिंग का शौक हैं तो जरूर करें गुजरात की इन अद्भुत पहाडियों की सैर...

गुजरात भारत के पश्चिम में स्थित देश का प्रमुख राज्य है। अपनी जीवंत संस्कृति और प्राचीन विरासत के अलावा, यह अपने विश्व प्रसिद्ध ऐतिहासिक स्थलों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। आप रन ऑफ कच्छ, सोमनाथ मंदिर, द्वारका, गांधीनगर, गिर नेशनल पार्क, जूनागढ़ और स्टैच्यू ऑफ कच्छ जैसी प्रसिद्ध जगहों की यात्रा कर सकते हैं। एकता गुजरात में स्थित है। यहां हर दिन हजारों लोग पहुंचते हैं। भट्ट की खाड़ी के पास स्थित 'विल्सन हिल्स' भी गुजरात में एक ऐसी जगह है जो हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड को मात देती है। इस लेख में हम आपको विल्सन हिल्स की खूबसूरती और घूमने लायक कुछ बेहतरीन जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं। विल्सन हिल्स के बारे में विल्सन हिल्स में घूमने लायक जगहों के बारे में जानने से पहले आइए इसकी खासियत के बारे में जानते हैं। विल्सन हिल्स को गुजरात के सबसे अच्छे हिल स्टेशनों में से एक माना जाता है। ये खूबसूरत पहाड़ियां वलसाड के पास हैं।विल्सन हिल्स की सुंदरता इतनी लोकप्रिय है कि कई लोग इसकी तुलना हिमाचल प्रदेश और उत्तराखंड से करते हैं। ऊंचे पहाड़, घने जंगल, ठंडी हवा और समुद्र तट इसकी खूबसूरती में चार चांद लगाते हैं। यहां का मौसम भी बहुत सुहावना है.

विल्सन हिल्स में पर्यटन स्थलों का भ्रमण प्रकृति से घिरे विल्सन हिल्स में घूमने के लिए कई अद्भुत और शानदार जगहें हैं। इन जगहों पर जाने के बाद आप गुजरात की बाकी जगहों को भूल जाएंगे। ओजोन घाटी जब विल्सन हिल्स की खूबसूरती को करीब से देखने की बात आती है तो ओजोन वैली का नाम जरूर सबसे पहले आता है। ओजोन घाटी की सुंदरता इतनी लोकप्रिय है कि कई लोग इसे गुजरात का नैनीताल या शिमला मानते हैं।विल्सन हिल्स से लगभग 5 मिनट की दूरी पर ओजोन वैली को व्यू पॉइंट के नाम से भी जाना जाता है। ओजोन घाटी विल्सन हिल्स की खूबसूरती में चार चांद लगा देती है। कोई भी इस घाटी में अपार हरियाली और अद्भुत दृश्यों की सराहना कर सकता है। बिलपुडी ट्विन झरने विल्सन हिल्स में बिलापुड़ी ट्विन झरने को एक छिपा हुआ खजाना माना जाता है। यह झरना न सिर्फ स्थानीय लोगों के बीच बल्कि दूर-दूर से आने वाले पर्यटकों के बीच भी मशहूर है।घने जंगल और छोटी पहाड़ियों के बीच बसा बिलपुरी ट्विन झरना एक लोकप्रिय पिकनिक स्थल भी माना जाता है। झरने के बारे में कहा जाता है कि जब पानी 30 फीट की ऊंचाई से गिरता है तो झरने की सुंदरता देखने लायक होती है। लेडी विल्सन संग्रहालय आपकी जानकारी के लिए बता दें कि विल्सन हिल्स के बारे में कहा जाता है कि मुंबई के तत्कालीन गवर्नर लॉर्ड विल्सन थे और उन्हीं के नाम पर इन पहाड़ियों का नाम रखा गया था।अगर आप विल्सन हिल्स का इतिहास जानना चाहते हैं तो लेडी विल्सन संग्रहालय जा सकते हैं। यहां आप लेडी विल्सन और लॉर्ड विल्सन से जुड़ी चीजें देख सकते हैं। आपको बता दें कि खूबसूरत पहाड़ों के बीच स्थित लेडी विल्सन म्यूजियम पर्यटकों के लिए खास जगह मानी जाती है।

अगर मनमोहन हसीन वादियों में छुट्टियां बिताने का प्लान बना रहें हैं तो मध्यप्रदेश की अमरकटक वादियों का ले इस बार आनन्द

मध्यप्रदेश के अमरकंटक की हसीन वादियों में ऐसी कई अद्भुत और मनमोहक जगहें मौजूद हैं, जहां गर्मी की छुट्टियां बिताने के लिए हजारों लोग पहुंचते हैं। मैकल पर्वत पर बसा अमरकंटक पर्यटकों की पहली पसंद बना हुआ है। अन्य स्थानों की तुलना में यहां गर्मी के मौसम में तापमान कम रहने के कारण और यहां की हरी-भरी वादियां तथा विभिन्न पर्यटक स्थल होने की वजह से देश के विभिन्न प्रांतों से हर दिन बड़ी संख्या में लोग आ रहे हैं। भीषण गर्मी के इस मौसम में अमरकंटक का वातावरण लोगों को खूब पसंद आ रहा है। आलम यह है कि पर्यटक एक दिन की जगह दो से तीन दिन ठहर जाते और जी भर के यहां के नैसर्गिक सौंदर्य का दीदार करते हैं। अमरकंटक ऊंचे पहाड़ पर बसा हुआ है, जहां चारों तरफ हरियाली ही हरियाली है। चारों तरफ पेड़ पौधे और मां नर्मदा का पवित्र जल का भराव गर्मी का एहसास नहीं होने देता है। लोग दोपहर के समय भी अमरकंटक के विभिन्न धार्मिक और पर्यटक स्थल पर जाते हैं और घंटों समय गुजारते हैं। अमरकंटक के वन क्षेत्र सीमा पर शंभू धारा जलाशय पर्यटकों को खूब आकर्षित कर रहा है। यहां पर वोटिंग की भी सुविधा है। पशु-पक्षियों का कलरव ध्वनि और घने जंगल के बीच यहां का ट्रेकिंग मार्ग सैलानियों को यहां पर बस खींच लेता है। इसी तरह सोनमूढ़ा जहां से सोन नदी का उद्गम स्थल है और यह स्थान हरे भरे वृक्षों की और पहाड़ी स्थल पर एक मनोरम दृश्य सुदूर छत्तीसगढ़ राज्य की घने जंगल बसाहट मैदानी क्षेत्र का दीदार कराता है। अमरकंटक में सगवन के घने जंगलों के बीच माई की बगिया एक अत्यंत सुंदर स्थान है। दूधिया सफेद संगमरमरी नर्मदा मंदिर और 51 शक्तिपीठों में से एक शोण शक्तिपीठ मुख्य रूप से चैत्र नवरात्रि में आने वाले पर्यटकों और श्रद्धालुओं को

सबसे ज्यादा आकर्षित करता है। लोग पहले यहां के गांधी कुंड और रामघाट में पवित्र नर्मदा में डुबकी लगाकर इस ग्रीष्म ऋतु में ठंडक का एहसास प्राप्त करते हैं। फिर यहां के विभिन्न दर्शनीय स्थलों का अवलोकन करने जाते हैं। विभिन्न प्रांतों से लोग यहां पहुंच ही रहे हैं देश विदेश के भी विदेशी सैलानी यहां आते हैं। गर्मी के इस मौसम में अमरकंटक में लोग जगह-जगह से प्रतिदिन आ रहे हैं। कई दिनों तक रुक कर प्रकृति के नजारों का आनंद उठा रहे हैं। नर्मदा के प्रवाह स्थल कपिलधारा जलप्रपात का नजारा अमरकंटक आने वाले प्रत्येक सैलानियों को यहां खींच लाता है। यहां की हरियाली तथा चारों तरफ गर्मी के मौसम में शीतल प्रदान करने वाले वृक्ष लोगों को यहां कई घंटे गुजारने को विवश कर देते हैं। पर्यटकों के आने से अमरकंटक के व्यापारी भी खुश हैं, जिससे यहां ट्रैवलिंग और होटल व्यवसाई भी अच्छा खासा व्यापार कर रहे हैं। अमरकंटक को पर्यटन नक्शे पर लाने के लिये म.प्र. टूरिज्म द्वारा भी प्रयास किये जा रहे है। डेस्टिनेशन डेवलपमेंट इनिशिएटिव के तहत अमरकंटक में टेंट सिटी बनाने और एक मेगा फेस्टिवल आयोजित करने की भी योजना है।

क्या आप भी घूमने के शौकीन हैं तो राजस्थान की इस मशहूर जगह की करें सैर....

डेजर्ट नेशनल पार्क की स्थापना वर्ष 1980 में रेगिस्तानी वनस्पतियों और जीवों दोनों को संरक्षित करने के उद्देश्य से की गई थी। रेगिस्तानी परिदृश्य के बीच रेत के टीलों और विदेशी जानवरों की प्रजातियों की एक झलक पाने के लिए लाखों पर्यटक इस स्थान पर आते हैं। यह राजस्थान में स्थित है और प्रसिद्ध थार रेगिस्तान की उल्लेखनीय पारिस्थितिक जैव विविधता को प्रदर्शित करता है। सुखद पारिस्थितिकी तंत्र में विविध वनस्पतियों और जीवों के साथ-साथ समृद्ध वन्य जीवन शामिल है जो बीहड़ पहाड़ों, टूटी हुई भूमि और रेगिस्तान के रेत के टीलों के माध्यम से एक सुखद अनुभव प्रदान करता है। चट्टानी चट्टानों, सड़कों और घनी नमक झील की मनमोहक सुंदरता यहां आने वाले हर पर्यटक के दिल और आत्मा को मंत्रमुग्ध कर देती है। यह क्षेत्र रेगिस्तान के प्रवासी और निवासी पक्षियों का आश्रय स्थल है। अनेक चील, हैरियर, बाज़, गिद्ध, केस्टरेल और गिद्ध। पक्षियों में, छोटे पंजे वाले ईगल, टैनी ईगल, चित्तीदार ईगल, लेगर फाल्कन और केस्ट्रेल सबसे आम हैं। सैंड ग्राउज़ छोटे तालाबों या झीलों के पास देखे जाते हैं। लुप्तप्राय ग्रेट इंडियन बस्टर्ड एक शानदार पक्षी है जो इस स्थान पर अपेक्षाकृत अच्छी संख्या में पाया जाता है। यह विभिन्न मौसमों में स्थानीय स्तर पर प्रवास करता है। इस क्षेत्र की यात्रा का सबसे अच्छा समय नवंबर और जनवरी के बीच है। डेजर्ट नेशनल पार्क में 180 मिलियन वर्ष पुराने जानवरों और पौधों के जीवाश्मों का संग्रह है। इस क्षेत्र में लगभग 6 मिलियन वर्ष पुराने डायनासोर के जीवाश्म पाए गए हैं। डेजर्ट नेशनल पार्क ज्यादातर भारतीय ब्लैकबक के लिए प्रसिद्ध है जो हिरण और मृग के बीच एक दुर्लभ प्रजाति है। डेजर्ट नेशनल पार्क आकर्षण वनस्पति दुर्लभ है, इस स्थान पर समुद्री घास और आका झाड़ी या कैलोट्रोपिस के टुकड़े देखे जा सकते हैं। परिदृश्य में ऊबड़-खाबड़ चट्टानें और कॉम्पैक्ट नमक झील के तल, साथ ही अंतर्ज्वारीय क्षेत्र और स्थिर और बदलते टीले दोनों शामिल हैं। विशाल विस्तार का लगभग 20 प्रतिशत भाग रेत के टीलों से ढका हुआ है। डेजर्ट नेशनल पार्क में कुछ झीलें देखने लायक हैं, जैसे पदम तलाओ झील, राजबाग झील, मिलक झील जो इस रेतीले वातावरण में रहने वाले जानवरों के लिए मुख्य जल स्रोत हैं। डेजर्ट नेशनल पार्क आगंतुक सूचना डेजर्ट नेशनल पार्क में प्रवेशः- डेजर्ट नेशनल पार्क घूमने के इच्छुक सभी आगंतुकों को प्रति व्यक्ति 100 रुपये प्रवेश शुल्क देना होगा। जीप या कार किराए पर लेने पर अतिरिक्त 100 रुपये और कोच किराए पर लेने पर 200 रुपये अतिरिक्त खर्च होते हैं। घूमने का सर्वोत्तम समयः नवंबर से मार्च डेजर्ट नेशनल पार्क कैसे पहुँचें? राष्ट्रीय उद्यान जैसलमेर शहर से लगभग 40 किमी दूर स्थित है और पर्यटक जैसलमेर शहर से बस द्वारा या टैक्सी या टैक्सी किराए पर लेकर यहाँ पहुँच सकते हैं। हवाई मार्गः- जोधपुर हवाई अड्डा।

केवल लक्ष्मण ही मेघनाद का वध कर सकता था, क्या कारण था ?

हनुमानजी की रामभक्ति की गाथा संसार भर में गाई जाती है। लक्ष्मणजी की भक्ति भी अद्भुत थी। लक्ष्मणजी की कथा के बिना श्री रामकथा पूर्ण नहीं है। अगस्त्य मुनि अयोध्या आए और लंका युद्ध का प्रसंग छिड़ गया। भगवान श्रीराम ने बताया कि उन्होंने कैसे रावण और कुंभकर्ण जैसे प्रचंड वीरों का वध किया और लक्ष्मण ने भी इंद्रजीत और अतिकाय जैसे शक्तिशाली असुरों को मारा। अगस्त्य मुनि बोले- श्रीराम बेशक रावण और कुंभकर्ण प्रचंड वीर थे, लेकिन सबसे बड़ा वीर तो मेघनाध ही था। उसने अंतरिक्ष में स्थित होकर इंद्र से युद्ध किया था और बांधकर लंका ले आया था। ब्रह्मा ने इंद्रजीत से दान के रूप में इंद्र को मांगा तब इंद्र मुक्त हुए थे। श्रीराम को आश्चर्य हुआ लेकिन भाई की वीरता की प्रशंसा से वह खुश थे॥ फिर भी उनके मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि आखिर अगस्त्य मुनि ऐसा क्यों कह रहे हैं कि इंद्रजीत का वध रावण से ज्यादा मुश्किल था ॥ अगस्त्य मुनि ने कहा- प्रभु इंद्रजीत को वरदान था कि उसका वध वही कर सकता था जो

(१) चौदह वर्षों तक न सोया हो, (२) जिसने चौदह साल तक किसी स्त्री का मुख न देखा हो, और (*) चौदह साल तक भोजन न किया हो ॥ श्रीराम बोले- परंतु मैं बनवास काल में चौदह वर्षों तक नियमित रूप से लक्ष्मण के हिस्से का फल-फूल देता रहा। मैं सीता के साथ एक कुटी में रहता था, बगल की कुटी में लक्ष्मण थे, फिर सीता का मुख भी न देखा हो, और चौदह वर्षों तक सोए न हों, ऐसा कैसे संभव है ॥ अगस्त्य मुनि सारी बात समझकर मुस्कुराए॥ प्रभु से कुछ छुपा है भला ! दरअसल, सभी लोग सिर्फ श्रीराम का गुणगान करते थे, लेकिन प्रभु चाहते थे कि लक्ष्मण के तप और वीरता की चर्चा भी अयोध्या के घर-घर में हो ॥ अगस्त्य मुनि ने कहा – क्यों न लक्ष्मणजी से पूछा जाए॥ लक्ष्मणजी आए प्रभु ने कहा कि आपसे जो पूछा जाए उसे सच-सच कहिएगा॥ प्रभु ने पूछा- हम तीनों चौदह वर्षों तक साथ रहे फिर तुमने सीता का मुख कैसे नहीं देखा ?, फल दिए गए फिर भी अनाहारी कैसे रहे ?, और १४ साल तक सोए नहीं ? यह कैसे हुआ ? लक्ष्मणजी ने बताया- भैया जब हम भाभी को तलाशते ऋष्यमूक पर्वत गए तो सुग्रीव ने हमें उनके आभूषण दिखाकर पहचानने को कहा ॥ आपको स्मरण होगा मैं तो सिवाए उनके पैरों के नुपूर के कोई आभूषण नहीं पहचान पाया था क्योंकि मैंने कभी भी उनके चरणों के ऊपर देखा ही नहीं. चौदह वर्ष नहीं सोने के बारे में सुनिए – आप और माता एक कुटिया में सोते थे. मैं रातभर बाहर धनुष पर बाण चढ़ाए पहरेदारी में खड़ा रहता था. निद्रा ने मेरी आंखों पर कब्जा करने की कोशिश की तो मैंने निद्रा को अपने बाणों से बेध दिया था ॥ निद्रा ने हारकर स्वीकार किया कि वह चौदह साल तक मुझे स्पर्श नहीं करेगी लेकिन जब श्रीराम का अयोध्या में राज्याभिषेक हो रहा होगा और मैं उनके पीछे सेवक की तरह छत्र लिए खड़ा रहूंगा तब वह मुझे घेरेगी ॥ आपको याद होगा राज्याभिषेक के समय मेरे हाथ से छत्र गिर गया था। अब मैं १४ साल तक अनाहारी कैसे रहा ! मैं जो फल-फूल लाता था आप उसके तीन भाग करते थे. एक भाग देकर आप मुझसे कहते थे लक्ष्मण फल रख लो। ।आपने कभी फल खाने को नहीं कहा- फिर बिना आपकी आज्ञा के मैं उसे खाता कैसे ? मैंने उन्हें संभाल कर रख दिया ॥ सभी फल उसी कुटिया में अभी भी रखे होंगे ॥ प्रभु के आदेश पर लक्ष्मणजी चित्रकूट की कुटिया में से वे सारे फलों की टोकरी लेकर आए और दरबार में रख दिया ॥ फलों की गिनती हुई, सात दिन के हिस्से के फल नहीं थे ॥ प्रभु ने कहा- इसका अर्थ है कि तुमने सात दिन तो आहार लिया था ? लक्ष्मणजी ने सात फल कम होने के बारे बताया- उन सात दिनों में फल आए ही नहीं। १--जिस दिन हमें पिताश्री के स्वर्गवासी होने की सूचना मिली, हम निराहारी रहे। २--जिस दिन रावण ने माता का हरण किया उस दिन फल लाने कौन जाता ॥ *--जिस दिन समुद्र की साधना कर आप उससे राह मांग रहे थे।४--जिस दिन आप इंद्रजीत के नागपाश में बंधकर दिनभर अचेत रहे, ।५--जिस दिन इंद्रजीत ने मायावी सीता को काटा था और हम शोक में रहे, ।६--जिस दिन रावण ने मुझे शक्ति मारी, ७--और जिस दिन आपने रावण-वध किया ॥ इन दिनों में हमें भोजन की सुध कहां थी ॥ विश्वामित्र मुनि से मैंने एक अतिरिक्त विद्या का ज्ञान लिया था- बिना आहार किए जीने की विद्या। उसके प्रयोग से मैं चौदह साल तक अपनी भूख को नियंत्रित कर सका जिससे इंद्रजीत मारा गया ॥ भगवान श्रीराम ने लक्ष्मण जी की तपस्या के बारे में सुनकर उन्हें ह्रदय से लगा लिया।

> “ अगस्त्य मुनि बोले- श्रीराम बेशक रावण और कुंभकर्ण प्रचंड वीर थे, लेकिन सबसे बड़ा वीर तो मेघनाध ही था। उसने अंतरिक्ष में स्थित होकर इंद्र से युद्ध किया था और बांधकर लंका ले आया था। ब्रह्मा ने इंद्रजीत से दान के रूप में इंद्र को मांगा तब इंद्र मुक्त हुए थे। श्रीराम को आश्चर्य हुआ लेकिन भाई की वीरता की प्रशंसा से वह खुश थे॥ फिर भी उनके मन में जिज्ञासा पैदा हुई कि आखिर अगस्त्य मुनि ऐसा क्यों कह रहे हैं कि इंद्रजीत का वध रावण से ज्यादा मुश्किल था ॥ अगस्त्य मुनि ने कहा- प्रभु इंद्रजीत को वरदान था कि उसका वध वही कर सकता था...

पर्यावरण पाठशाला : गिलहरियों की महत्वपूर्ण भूमिका: उन्हें खाना और पानी देना क्यों मायने रखता है : अंकुर

गिलहरियाँ, पेड़ों की चोटी पर रहने वाली फुर्तीली कलाबाज़, केवल मनोरंजन करने वाली या पार्क में रहने वाली निवासी प्रतीत हो सकती हैं, लेकिन उनका महत्व उनकी चंचल हरकतों से कहीं अधिक है। ये छोटे स्तनधारी हमारे समाज और प्राकृतिक दुनिया दोनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं, जिससे उनके महत्व को समझना और सराहना करना आवश्यक हो जाता है।

प्रकृति में, गिलहरियाँ पारिस्थितिकी तंत्र की गतिशीलता में प्रमुख खिलाड़ी के रूप में कार्य करती हैं। वे बीज के फैलाव में योगदान देते हैं, जैसे कि नट और बीज को दफनाना, अनजाने में पेड़ लगाना क्योंकि वे अपने कुछ भंडार भूल जाते हैं। यह व्यवहार वन पुनर्जनन और विविधता में सहायता करता है, जिससे पादप समुदायों की संरचना और संरचना प्रभावित होती है। इस भूमिका को निभाकर, गिलहरियाँ पारिस्थितिक तंत्र के स्वास्थ्य और लचीलेपन में योगदान देती हैं।

इसके अलावा, गिलहरियाँ विभिन्न शिकारियों के लिए शिकार का काम करती हैं, जिनमें शिकारी पक्षी, साँप और स्तनधारी मांसाहारी शामिल हैं। खाद्य जाल में उनकी उपस्थिति इन शिकारियों की आबादी को बनाए रखने, पारिस्थितिक तंत्र के भीतर संतुलन बनाए रखने में मदद करती है।

शहरी और उपनगरीय वातावरण में, गिलहरियाँ कीड़ों की आबादी को नियंत्रित करके अमूल्य पारिस्थितिक सेवाएँ प्रदान करती हैं। उनके आहार में कीड़े और कीड़ों के लार्वा शामिल होते हैं, जो कीटों की आबादी को नियंत्रण में रखने में मदद करते हैं। रासायनिक कीटनाशकों की आवश्यकता को कम करके, गिलहरियाँ अप्रत्यक्ष रूप से पर्यावरणीय स्वास्थ्य और मानव कल्याण में योगदान करती हैं।

अपने पारिस्थितिक योगदान के अलावा, गिलहरियाँ कई लोगों के दिलों में एक विशेष स्थान रखती हैं। उनका चंचल व्यवहार और फुर्तीली हरकतें सभी उम्र के पर्यवेक्षकों को खुशी देती हैं। गिलहरियों को खाना खिलाना और पानी उपलब्ध कराना न केवल उनकी भलाई में मदद करता है बल्कि मनुष्य और प्रकृति के बीच गहरे संबंध को भी बढ़ावा देता है। कई लोगों के लिए, गिलहरियों को देखने का सरल कार्य दैनिक जीवन की हलचल से राहत के क्षण के रूप में काम कर सकता है।

हालाँकि, देखभाल और जिम्मेदारी के साथ गिलहरियों को खाना खिलाना आवश्यक है। उचित भोजन, जैसे कि मेवे, बीज, फल और सब्जियाँ प्रदान करना, यह सुनिश्चित करता है कि उनकी पोषण संबंधी ज़रूरतें बिना किसी नुकसान के पूरी हों। उन्हें प्रसंस्कृत या अस्वास्थ्यकर खाद्य पदार्थ खिलाने से बचें, क्योंकि इससे उनके स्वास्थ्य पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। इसके अतिरिक्त, उन्हें हाइड्रेटेड रहने में मदद करने के लिए, विशेष रूप से गर्म और शुष्क अवधि के दौरान, ताजा पानी उपलब्ध कराना महत्वपूर्ण है।

गिलहरियाँ हमारे समाज और प्राकृतिक दुनिया दोनों में बहुआयामी भूमिकाएँ निभाती हैं। बीज फैलाव से लेकर कीट नियंत्रण और आनंद के क्षण प्रदान करने तक, ये छोटे जीव उन तरीकों से योगदान करते हैं जिन्हें अक्सर अनदेखा कर दिया जाता है। उनके महत्व को समझकर और उसकी सराहना करके, और जिम्मेदारी से उनकी जरूरतों को पूरा करके, हम यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि गिलहरियाँ बढ़ती रहें और आने वाली पीढ़ियों के लिए हमारे जीवन और पारिस्थितिकी तंत्र को समृद्ध करें।

यदि आपके पास गिलहरियों से संबंधित कोई सुंदर कहानी है, तो कृपया हमें ईमेल करें और हमारे पारिस्थितिकी तंत्र को स्वच्छ और हरित बनाने के लिए हमारे MeraGhosla.com समुदाय का हिस्सा बनें।

Email : indiangreenbuddy@gmail.com

भारत देश की जेलों में बंद कैदी चुनाव तो लड़ सकते हैं पर वोट नहीं दे सकते, आखिर ऐसी दोगली नीति क्यों ?

क्या वह देश के नागरिक नही है ?

क्या उनके नाम वोटर लिस्ट में शामिल नहीं ?

कैदियों को भारत के कानून के तहत जेल में बंद रहते हुए नेता बनने / चुनाव लड़ने का हक है पर नेता चुनने का नही, क्यों ?

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। देश की आबादी की गिनती में उनका नाम शमिल है। उनके परिवार वाले सभी करों का भुगतान भी करते हैं, लेकिन इस लोकतांत्रिक व्यवस्था की मजबूती के लिए जरूरी मतदान में इनकी भागीदारी नहीं। साढ़े पांच लाख से ज्यादा कैदी देश की 1300 से ज्यादा जेलों में बंद हैं। इन साढ़े पांच लाख में करीब 10 फीसदी ऐसे है जिनके दोष सिद्ध हुए हैं और जुर्म की सजा भुगतने के लिए जेल में है। लेकिन, बाकी के 90 प्रतिशत फैसले के इंतजार में होते हुए देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था से अलग थलग रखे हुए हैं। जानकारी के मुताबिक देश में कुल 1306 जेलें हैं। जिनमें 145 केंद्रीय जेल, 413 जिला जेल और 565 उप जेल हैं। इसके अलावा 88 खुली जेल, 44 विशेष जेल, 29 महिला जेल और 19 बोसर्टल स्कूल के अलावा 3 अन्य जेल भी मौजूद हैं। देश की इन जेलों में करीब 5 लाख 54 हजार लोग बंद हैं। इनमें से करीब 4 लाख 27 हजार लोग ऐसे हैं, जिन पर कोई दोष सिद्ध नहीं हुआ है और फिलहाल इनका ट्रायल ही चल रहा है।

जेल में बंद कैदियों को मताधिकार से वंचित करने का प्रमाण अंग्रेजी जब्ती अधिनियम 1870 में मिलता है। उस दौरान देशद्रोह या गुंडागर्दी के दोषी व्यक्तियों को मताधिकार से अयोग्य ठहरा दिया जाता था और उन्हें वोट देने से वंचित कर दिया जाता था। यही नियम गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट 1935 में भी लागू रहा। इसके तहत खास सजा काट रहे लोगों को वोट देने से रोक दिया गया था। हालांकि, जन प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 में किसी व्यक्ति से मताधिकार का अधिकार तब वापस ले लिया जाता है, जब वह आरोपित, दोषी हो / जेल में हो।

लोक प्रतिनिधित्व अधिनियम 1951 की धारा 62 कैदियों को वोट देने का अधिकार देती है। धारा 62(5) के तहत कुछ लोगों को अयोग्य ठहराया गया है। इसमें कहा गया है कि कोई भी व्यक्ति किसी भी चुनाव में मतदान नहीं करेगा, यदि वह जेल में बंद है, चाहे वह सजा के तहत कारावास में बंद है या परिवहन या अन्यथा, अथवा पुलिस की वैध हिरासत में है। हालांकि, इसकी उपधारा के तहत यह कुछ व्यक्ति पर लागू नहीं होगा यदि वह कुछ समय के लिए प्रिवेंटिव कस्टडी में है। संविधान के अनुच्छेद 326 में मताधिकार की अयोग्यता के लिए कुछ आधार मौजूद हैं। यह अयोग्यताएं मानसिक अस्वस्थता, गैर-निवास और अपराध/भ्रष्ट/अवैध आचरण से संबंधित हैं। प्रवीण कुमार चौधरी बनाम भारत निर्वाचन आयोग [डब्ल्यू.पी. (सी) 2336/2019], मामले में दिल्ली उच्च न्यायालय ने फिर से पुष्टि की कि कैदियों को वोट देने का अधिकार नहीं है।

भारत में जेल में रहते हुए चुनाव लड़ने की परंपरा बहुत पुरानी है। कहा जाता है कि इसकी शुरुआत पूर्वांचल के गैंगस्टर हरिशंकर तिवारी ने सबसे पहले जेल में रहते हुए चुनाव जीता था। इसके बाद बाहुबलियों और गैंगस्टरों में यह तरीका तेजी से प्रसिद्ध हुआ और जेल में रहते हुए कई गैंगस्टर और बाहुबली चुनाव जीते। इनमें मुख्तार अंसारी, अमरमणि त्रिपाठी दर्जनों प्रमुख नाम हैं। ये प्रक्रिया आज भी जारी है। चुनाव की प्रक्रिया में जेल में बंद कैदियों को वोट देने का अधिकार नहीं होता है, लेकिन वे चुनाव लड़ लेते हैं। हालांकि, इसके लिए महत्वपूर्ण है कि कैदी विचाराधीन होना चाहिए। चुनाव लड़ने वाले व्यक्ति को पीठासीन अधिकारी के सामने नामांकन पत्र देना होता है। ऐसी स्थिति में सवाल उठेगा कि जेल में बंद कैदी पीठासीन अधिकारी के समक्ष कैसे हाजिर होगा। गिरते मत प्रतिशत को सहेजने/ बढाने में मददगार लोकसभा चुनाव के हुए दो चरणों में देशभर में मतदान प्रतिशत पिछले चुनाव की तुलना में कम रहा है। इसको सहेजने के लिए जहां सियासी प्रयास तेज हो रहे हैं वहीं निर्वाचन आयोग भी अपनी कोशिशों में लगा हुआ है। ऐसे में जेल में बंद विचाराधीन कैदियों को मतदान अधिकार देकर इस घटते मत प्रतिशत को सहेजा जा सकता है। बुजुर्गों, दिव्यांगों, पत्रकारों, कर्मचारियों को दिए जाने वाली अतिरिक्त सुविधाओं वाले मतदान प्रक्रिया से जेल में बंद कैदियों को भी जोड़ा जा सकता है।

इंडिया अलायंस प्रत्याशी कुलदीप कुमार का जसोला विहार में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा भव्य स्वागत

परिवहन विशेष न्यूज

नईदिल्ली। पूर्वी दिल्ली लोकसभा क्षेत्र के जसोला विहार शाहीन बाग में इंडिया अलायंस के प्रत्याशी कुलदीप कुमार के समर्थन में कांग्रेस पार्टी के कार्यकर्ताओं ने भव्य स्वागत समारोह का आयोजन किया इस कार्यक्रम का आयोजन कांग्रेस पार्टी के युवा नेता और प्रदेश कांग्रेस कमेटी के सोशल मीडिया चेयरमैन हिदायतुल्ला जेंटल ने किया। इस मौके पर वरिष्ठ कांग्रेस नेता और जाकिर नगर वार्ड के पूर्व पार्षद शोएब दानिश, सैयद तहसीन अहमद, मुहम्मद शकील, मुहम्मद रईस, मुहम्मद शाहिद, गुड्डू भाई , अबरार अहमद, किनिज फातिमा, अराफा खानम समेत कांग्रेस और आम आदमी पार्टी के कई कार्यकर्ता उपस्थित थे इस मौके पर वक्ताओं ने सभी से पूर्वी दिल्ली से इंडिया अलायंस के उम्मीदवार को समर्थन देने की अपील की. इस अवसर पर कुलदीप कुमार ने बीजेपी पर संविधान बदलने का आरोप लगाया और कहा कि आम आदमी पार्टी और कांग्रेस का गठबंधन संविधान की रक्षा के लिए हुआ है संविधान की रक्षा के लिए हम हर किसी से समझौता करने को तैयार हैं. उन्होंने बीजेपी के 400 पार नारे का भी मजाक उड़ाया और कहा कि उनके नेता कहते हैं कि हमें संविधान बदलने के लिए 400 सीटें चाहिए, पहले चुनाव जीतो, बाद में संविधान बदलो.' बाबा साहेब के संविधान को बदलने की हिम्मत किसी में नहीं है उन्होंने कहा कि बीजेपी के लोगों को लगता था कि अरविंद केजरीवाल को जेल में डालकर हम दिल्ली में चुनाव जीत सकते हैं. दिल्ली में हर कोई उनके बेटे और भाई अरविंद केजरीवाल के साथ खड़ा है. आम आदमी पार्टी के उम्मीदवार ने चेतावनी दी कि अगर मोदी जी दोबारा प्रधानमंत्री बने तो यह देश का आखिरी चुनाव होगा।

पूर्व पार्षद शोएब दानिश ने कहा कि पूर्वी दिल्ली से एक अच्छे आदमी को उम्मीदवार बनाया. हम घर-घर जाकर कुलदीप कुमार की जीत के लिए वोट की अपील करेंगे।

युवा नेता हिदायतुल्ला जेंटिल ने कहा कि कांग्रेस पार्टी का हर कार्यकर्ता यहां से इंडिया अलायंस की जीत के लिए हर संभव प्रयास करेगा. उन्होंने कहा कि राहुल गांधी नफरत की दीवार को गिराने के लिए ही कन्याकुमारी से कश्मीर तक चले. और इसी का नतीजा है कि आज आम आदमी पार्टी और कांग्रेस के कार्यकर्ता एक जगह इकट्ठा हुए हैं और पूरी उम्मीद है कि इस बार दिल्ली और देश में बीजेपी की हार तय है क्योंकि जनता उनकी मंशा और हरकतों को जान चुकी है इसलिए मैं सभी से इंडिया अलायंस प्रत्याशी के पक्ष में वोट करने की अपील करता हूं।इस अवसर पर अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार व्यक्त किये और कुलदीप कुमार के पक्ष में वोट देने की अपील की।

कम नहीं हो रही दिल्ली कांग्रेस की मुश्किलें, अब ये दिग्गज भी छोड़ सकते हैं पार्टी; प्रत्याशियों की बढ़ी मुश्किलें

आम आदमी पार्टी से गठबंधन पुराने कांग्रेसियों को हजम नहीं हो रहा है। जिस पार्टी ने कांग्रेस को भ्रष्ट बताते हुए उसकी कब्र खोदी थी और जिसके शीर्ष नेता स्वयं आज भ्रष्टाचार के आरोपों में जेल में बंद हैं के साथ सियासी गठजोड़ को शीला सरकार के साथ रहे मंत्री-विधायक कतई तार्किक नहीं मान रहे। ऐसे में पार्टी के अन्य नेता कांग्रेस छोड़ सकते हैं।

नई दिल्ली। अरविंदर सिंह लवली के प्रदेश अध्यक्ष पद छोड़ने तथा पूर्व मंत्री राज कुमार चौहान के बाद अब पूर्व विधायक नसीब सिंह और नीरज बसोया के भी कांग्रेस छोड़ देने से पार्टी की सियासत गर्माती जा रही है। सूत्रों की मानें तो अभी यह सिलसिला जारी रह सकता है। इसकी वजह से चुनावी बेला में संगठन ही नहीं, प्रत्याशियों की मुश्किलें भी बढ़ती जा रही हैं। दरअसल, आम आदमी पार्टी से गठबंधन पुराने कांग्रेसियों को हजम नहीं हो रहा है। जिस पार्टी ने कांग्रेस को भ्रष्ट बताते हुए उसकी कब्र खोदी थी और जिसके शीर्ष नेता स्वयं आज भ्रष्टाचार के आरोपों में जेल में बंद हैं, के साथ सियासी गठजोड़ को शीला सरकार के साथ रहे मंत्री-विधायक कतई तार्किक नहीं मान रहे।

कांग्रेस खुद अपनी जमीन छोड़ती जा रही

उनका कहना है कि इस तरह कांग्रेस खुद अपनी जमीन छोड़ती जा रही है। रही सही कसर दो सीटों पर बाहरी उम्मीदवार कन्हैया कुमार एवं उदित राज को टिकट देकर पूरी कर दी गई। मालूम हो कि कन्हैया कुमार ने अपने संसदीय क्षेत्र में जो होर्डिंग्स लगवाए हैं, उनमें लवली क्या, राष्ट्रीय अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे तक का फोटो नहीं है। जबकि सीएम अरविंद केजरीवाल का फोटो लगाया गया है। कन्हैया शीला सरकार की उपलब्धियों को दरकिनार कर केजरीवाल का बखान भी खूब कर रहे हैं।

सुनीता से मुलाकात की जानकारी नहीं

इसी तरह उदित राज कांग्रेस को चार प्रतिशत वोट पर सिमटने वाली पार्टी कहते घूम रहे हैं। इससे पार्टी के पुराने नेताओं का आक्रोश और भड़क रहा है। आलम यह है कि बुधवार को कन्हैया कुमार के मुख्यमंत्री अरविंद केजरीवाल की पत्नी सुनीता केजरीवाल से मुलाकात की सूचना भी प्रदेश कांग्रेस के नेताओं के संज्ञान में नहीं थी।

अमित मलिक भी छोड़ सकते हैं पार्टी

पार्टी सूत्रों की मानें तो पूर्व मुख्यमंत्री शीला दीक्षित के बेटे पूर्व सांसद संदीप दीक्षित भी आने वाले दिनों में कड़ा कदम उठा सकते हैं। इसी तरह पूर्व प्रदेश युवा कांग्रेस अध्यक्ष अमित मलिक भी जल्द ही पार्टी छोड़ सकते हैं। इसके अलावा दक्षिणी दिल्ली कांग्रेस के एक नेता जो कई वर्षों से प्रदेश स्तर पर विभिन्न पदों पर आसीन रहे है, दिल्ली में आम आदमी पार्टी के साथ कांग्रेस के गठबंधन से नाराज होकर पार्टी से इस्तीफा दे सकते हैं। और भी कुछ नेता हैं, जिनका निर्णय वक्त के साथ सामने आएगा।

कन्हैया-उदित राज को समर्थन देने से इनकार

सियासी जानकारों की मानें तो कांग्रेस की इस कलह का मतदाताओं के बीच बहुत गलत संदेश जा रहा है। आप के अनेक नेता जेल में बंद हैं तो प्रदेश कांग्रेस के नेता आपस में ही लड़ रहे हैं। कन्हैया कुमार एवं उदित राज को पार्टी कार्यकर्ता ही अपना समर्थन देने से इनकार कर रहे हैं। इन हालातों में जो मतदाता गठबंधन प्रत्याशियों को वोट देने का मन बना रहे थे, उनकी सोच भी बदल सकती है अथवा ऐसे लोगों की संख्या कम हो सकती है।

राजधानी में पानी की किल्लत के साथ ही दूषित जल की आपूर्ति, मुख्य सचिव ने दिए जांच के आदेश

राजधानी दिल्ली में कई स्थानों पर पानी की किल्लत के साथ ही दूषित जल आपूर्ति की समस्या है। इसके समाधान के लिए मुख्य सचिव नरेश कुमार ने दिल्ली जल बोर्ड को पानी की गुणवत्ता की जांच बढ़ाने का निर्देश दिया है। इस समय दिल्ली जल बोर्ड प्रतिदिन पानी के लगभग पांच सौ नमूने एकत्र कर जांच के लिए भेजता है।

नई दिल्ली। दिल्ली में कई स्थानों पर पानी की किल्लत के साथ ही दूषित जल आपूर्ति की समस्या है। इसके समाधान के लिए मुख्य सचिव नरेश कुमार ने दिल्ली जल बोर्ड को पानी की गुणवत्ता की जांच बढ़ाने का निर्देश दिया है। इस समय दिल्ली जल बोर्ड प्रतिदिन पानी के लगभग पांच सौ नमूने एकत्र कर जांच के लिए भेजता है। मुख्य सचिव ने पिछले दिनों बोर्ड के अधिकारियों के साथ बैठक में जांच के नमूनों की संख्या प्रतिदिन एक हजार करने का आदेश दिया था।

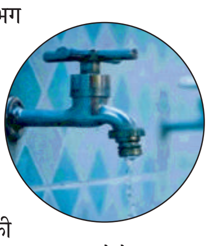

कर्मचारियों की संख्या है कम

बोर्ड के अधिकारियों का कहना है कि कर्मचारियों की संख्या कम होने के कारण जांच की संख्या बढ़ाने में परेशानी है। घरों में पहुंच रहे पानी की जांच करने के लिए आठ लैब हैं। इनमें प्रतिदिन पांच सौ नमूने की जांच होती है। बोर्ड के अधिकारियों का कहना है कि जांच की संख्या बढ़ाने के लिए लैब में प्रशिक्षित कर्मचारियों की संख्या बढ़ाने के साथ ही नमूना एकत्र करने वाले कर्मचारियों की संख्या बढ़ानी होगी। अधिकारियों ने बताया कि बैठक में मुख्य सचिव ने आपात स्थिति में जल आपूर्ति सुनिश्चित करने, टैंकरों की उपलब्धता व अन्य जरूरी कदम उठाने का निर्देश दिया है। उल्लेखनीय है कि इस वर्ष अभी तक दिल्ली जल बोर्ड ने समर एक्शन प्लान घोषित नहीं हुआ है।

गाजीपुर लैंडफिल पर दिल्ली हाईकोर्ट का फैसला, साइट के पास नहीं दी जा सकती डेयरियों को काम करने की अनुमति

गाजीपुर लैंडफिल साइड के पास नहीं दी जा सकती डेयरियों को काम करने की अनुमति नहीं दी जा सकती है। दिल्ली हाईकोर्ट ने दिल्ली के मुख्य सचिव एमसीडी आयुक्त एमसीडी पशु चिकित्सा निदेशालय और दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड के सीईओ को अगली तारीख पर कार्यवाही में शामिल होने का निर्देश दिया। अधिकारी उस भूमि की उपलब्धता की संभावना भी तलाशेंगे जहां डेयरियों को स्थानांतरित किया जा सके।

नई दिल्ली। दिल्ली हाई कोर्ट ने बुधवार को कहा कि गाजीपुर जैसी लैंडफिल साइटों के पास डेयरियों को काम करने की अनुमति नहीं दी जा सकती क्योंकि वहां रखी गायें अपशिष्ट पदार्थ खाती हैं और उनके द्वारा उत्पादित दूध का लोगों, विशेषकर बच्चों पर बुरा प्रभाव पड़ना तय है।

कार्यवाहक मुख्य न्यायाधीश मनमोहन व न्यायमूर्ति मनमीत प्रीतम सिंह अरोड़ा की पीठ ने कहा कि डेयरी कालोनियों को उचित सीवेज, जल निकासी और बायोगैस सुविधाओं और पर्याप्त खुले स्थानों वाले क्षेत्रों में स्थानांतरित किया जाना चाहिए।

अगली तारीख पर कार्यवाही में शामिल होने के निर्देश

इसके साथ ही अदालत ने दिल्ली के मुख्य सचिव, दिल्ली नगर निगम (एमसीडी) आयुक्त, एमसीडी पशु चिकित्सा निदेशालय और दिल्ली शहरी आश्रय सुधार बोर्ड के सीईओ को सुनवाई की अगली तारीख पर कार्यवाही में शामिल होने का निर्देश दिया। साथ ही आदेश दिया कि अधिकारी उस भूमि की उपलब्धता की संभावना भी तलाशेंगे जहां डेयरियों को स्थानांतरित किया जा सके।

यरियों को तुरंत स्थानांतरित करने की आवश्यकता

पीठ ने कहा कि कि लैंडफिल के बगल में डेयरियों से मनुष्यों को होने वाले गंभीर खतरे को ध्यान में रखते हुए अदालत का प्रथम दृष्टया विचार है कि इन डेयरियों को तुरंत स्थानांतरित करने की आवश्यकता है। अदालत ने उक्त टिप्पणी अधिवक्ता सुनयना सिब्बल और अन्य द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए की।

याचिका में राष्ट्रीय राजधानी में नौ डेयरी कॉलोनियों को अन्य उचित स्थानों पर स्थानांतरित करने के निर्देश देने की मांग की गई थी। अदालत ने कहा कि मामले पर कोई भी बाध्यकारी निर्देश जारी करने से पहले संबंधित अधिकारियों का पक्ष सुनना चाहेगा कि कि इन निर्देशों को कैसे तैयार किया जाना चाहिए।

स्कूलों में बम की धमकी से पूरे दिन रही अफरातफरी, दिल्ली में हाई अलर्ट जारी; जांच में जुटी एजेंसियां

एनसीआर के 175 स्कूलों को बुधवार सुबह ई-मेल भेजकर बम से उड़ाने की धमकी दिए जाने से अफरातफरी मच गई। दिल्ली के 162 गौतमबुद्ध नगर के पांच गुरुग्राम के पांच और गाजियाबाद के तीन स्कूलों को धमकी वाले ईमेल मिले। इसके बाद स्कूलों की छुट्टी कर दी गई। कई स्कूलों में गेट से ही छात्रों को लौटा दिया गया। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इसे गंभीरता से लिया है।

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। एनसीआर के 175 स्कूलों को बुधवार सुबह ई-मेल भेजकर बम से उड़ाने की धमकी दिए जाने से अफरातफरी मच गई। दिल्ली के 162, गौतमबुद्ध नगर के पांच, गुरुग्राम के पांच और गाजियाबाद के तीन स्कूलों को धमकी वाले ईमेल मिले। इसके बाद स्कूलों की छुट्टी कर दी गई। कई स्कूलों में गेट से ही छात्रों को लौटा दिया गया।

पुलिस के साथ ही बम एवं डाग स्क्वाड, कैट एंबुलेंस और फायर ब्रिगेड की टीम ने स्कूलों को खाली कराया। स्कूलों की जांच में बम या कोई अन्य संदिग्ध वस्तु नहीं मिलने पर ईमेल को फर्जी करार दिया गया। दिल्ली पुलिस के स्पेशल सेल को जांच सौंप दी गई है। केंद्रीय गृह मंत्रालय ने इसे गंभीरता से लिया है।

दिल्ली में हाई अलर्ट कर दिया गया है

केंद्रीय एजेंसियों को जांच में सहयोग करने का निर्देश देते हुए दिल्ली में हाई अलर्ट कर दिया गया है। केंद्रीय गृह सचिव अजय भल्ला ने पुलिस आयुक्त संजय अरोड़ा को तलब कर पूरे मामले की जानकारी ली और आरोपित को जल्द से जल्द पकड़ने के निर्देश दिए। इस मसले को लेकर गृह मंत्रालय में संक्षिप्त बैठक भी हुई, जिसमें आइबी प्रमुख शामिल हुए।

दिल्ली के उपराज्यपाल वीके सक्सेना ने विशेष आयुक्त कानून व्यवस्था रवींद्र सिंह यादव के साथ माडल टाउन स्थित डीएवी पब्लिक स्कूल में जाकर हालात का जायजा लिया। इसके बाद उन्होंने केंद्रीय गृह सचिव को हालात की जानकारी दी।

छुट्टी की बात कहकर बच्चों को गेट से ही लौटा दिया

जानकारी के मुताबिक, बुधवार सुबह छह बजे से ही स्कूलों में ईमेल आने शुरू हो गए थे। जैसे-जैसे स्कूल प्रशासन ईमेल देखते रहे, पुलिस को सूचना मिलती रही। कुछ ही देर में पूरी दिल्ली के 162 स्कूलों में बम की सूचना से हड़कंप मच गया। स्कूलों को ये ईमेल एक समय पर नहीं आए हैं, बल्कि इनका समय अलग-अलग है। जिन स्कूलों में बच्चे पहुंच गए थे, वहां छुट्टी कर दी गई। वहीं, जिन स्कूलों को बच्चों के आने से पहले ई-मेल का पता चल गया, उन्होंने छुट्टी की बात कहकर बच्चों को गेट से ही लौटा दिया।

स्कूल बसों को लौट दिया गया और बच्चों को वापस घर पहुंचाया गया। इंटरपोल की मदद ले रही दिल्ली पुलिस, रूस का है आइपी एड्रेस दिल्ली पुलिस जांच में इंटरपोल की भी मदद ले रही है। अब तक की जांच में पता चला है कि सभी स्कूलों को एक ही आइडी से एक जैसे ईमेल भेजे गए हैं। धमकी भरे ईमेल डाट काम की जगह आरयू लिखा है। स्कूलों को एक ईमेल आया, जो आइपी एड्रेस रूस में इस्तेमाल किया जाता है।

भारत में बैठकर साजिश रची जा सकती है

प्रेट्र ने एक पुलिस अधिकारी के हवाले से बताया है कि सावरिम एक अरबी शब्द है जिसका इस्तेमाल आतंकी संगठन इस्लामिक स्टेट (आइएस) ने पिछले कई वर्षों में अपने प्रचार वीडियो में बड़े पैमाने पर किया है। ईमेल में

"पवित्र कुरान की आयतें" भी थीं। जांच एजेंसी का कहना है कि कोई जरूरी नहीं है कि मेल रूस से ही भेजे गया हो। भारत में बैठकर भी फर्जी आइपी एड्रेस का इस्तेमाल कर साजिश रची जा सकती है।

जांच एजेंसी को शक है कि रूस के इंटरनेट प्रोटोकाल (आइपी) एड्रेस के साथ वर्चुअल प्राइवेट नेटवर्क (वीपीएन) का इस्तेमाल कर ईमेल किया गया। दरअसल, वीपीएन आइपी एड्रेस को छिपा देता है, जिससे सही आइपी एड्रेस का पता नहीं लग पाता है।

चुनाव के समय भी गौर कर रहीं एजेंसियां

प्रेट्र के मुताबिक, दिल्ली पुलिस की आतंकवाद रोधी इकाई ने जांच शुरू कर दी है, क्योंकि प्रारंभिक जांच में एक आतंकी समूह की गहरी साजिश का संकेत मिला है। पुलिस के एक अधिकारी ने कहा, "मामला राष्ट्रीय सुरक्षा से जुड़ा है, इसलिए गहन जांच की जरूरत है।" नाम न छापने की शर्त पर एक अधिकारी ने कहा, 'बड़ी संख्या में इस तरह के धमकी भरे ईमेल भेजने का मुख्य एजेंडा कुछ आतंकी समूहों द्वारा दहशत पैदा करना और साइबर युद्ध छेड़ना है। उन्होंने कहा, जांचकर्ता समय के पहलू पर भी गौर कर रहे हैं क्योंकि देश में लोकसभा चुनाव चल रहा है।

सरकार को 15 हजार करोड़ का चूना लगाने वाले तीन और गिरफ्तार, पुलिस ने 25-25 हजार रुपये का रखा था इनाम

सरकार को 15 हजार करोड़ से अधिक का चूना लगाने के मामले में पुलिस ने तीन और आरोपितों को गिरफ्तार किया है। बीते दिनों सेक्टर-20 पुलिस ने दिल्ली के कारोबारी तुषार गुप्ता को गिरफ्तार किया था। पुलिस ने इन पर 25-25 हजार रुपये का इनाम घोषित कर रखा था। इस मामले में 33 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

नोएडा। फर्जी दस्तावेज के जरिये इनपुट टैक्स क्रेडिट (आइटीसी) क्लेम कर सरकार को 15 हजार करोड़ से अधिक का चूना लगाने के मामले में पुलिस ने तीन और आरोपितों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने इन पर 25-25 हजार रुपये का इनाम घोषित कर रखा था।

मामले में 33 आरोपितों को हो चुकी है गिरफ्तारी

पुलिस इनसे पहले इस मामले में 33 आरोपितों को गिरफ्तार कर चुकी है। इनके पास से मोबाइल, लैपटाप और नकदी बरामद हुई है। अपराध शाखा के डीसीपी शक्ति मोहन अवस्थी ने बताया कि बीते दिनों सेक्टर-20 पुलिस ने दिल्ली के कारोबारी तुषार गुप्ता को गिरफ्तार किया था।

उसके बाद पता चला कि दिल्ली के पंजाबी बाग के संजय ढींगरा, कनिका ढींगरा और मयंक ढींगरा ने कई करोड़ रुपये का फर्जीवाड़ा किया था। तीनों ने फर्जी तरीके से इनपुट टैक्स क्रेडिट लेकर सरकार के राजस्व को भारी नुकसान पहुंचाया। इनकी गिरफ्तारी पर 25-25 हजार रुपये इनाम घोषित कर रखा था।

बुधवार सुबह हुई गिरफ्तारी

इसके अलावा इनकी करीब एक हजार करोड़ से अधिक की संपत्ति कुर्क करने के लिए नोटिस भी चस्पा कर रखा था। बुधवार सुबह तीनों आरोपितों को गिरफ्तार कर लिया। उन्होंने बताया कि संजय, कनिका और मयंक ने कारोबार की आड़ में कई फर्जी कंपनियां बनाईं और अवैध तरीके से आइटीसी लिया। बता दें कि पुलिस ने पिछले वर्ष जून में 2600 से अधिक फर्जी कंपनी खोलकर सरकार को अरबों रुपये का नुकसान पहुंचाने वाले गिरोह का पर्दाफाश किया था।

इस मामले में गौरव सिंघल, गुरमीत सिंह, राजीव, राहुल, विनीता, अश्वनी, अतुल सेंगर, दीपक मुरजानी, यासीन, विशाल, राजीव, जतिन, नंदकिशोर, अमित कुमार, महेश, प्रीतम शर्मा, राकेश कुमार, अजय कुमार, दिलीप कुमार, मनन सिंघल, पीयूष, अतुल गुप्ता, सुमित गर्ग, कुणाल समेत 33 लोगों को गिरफ्तार किया जा चुका है।

खास बात यह है अब तक किसी भी आरोपित को भी जमानत नहीं मिली है। नोएडा पुलिस की मजबूती पैरवी के कारण आरोपित लंबे समय से जेल में हैं। अन्य फरार आरोपितों की तलाश में नोएडा पुलिस की तीन टीमें कई संभावित ठिकानों पर दबिश दे रही हैं।

गुरुग्राम के पांच स्कूलों में भी भेजी गई बम होने की ई-मेल, बम डिस्पोजल स्क्वॉड टीम ने किया निरीक्षण

दिल्ली-एनसीआर के कई स्कूलों में बुधवार सुबह को बम होने की सूचना मिली। वहीं गुरुग्राम के पांच स्कूलों में भी बम होने की ई-मेल भेजी गई। इसकी जानकारी पांच बजे मिली है। जिन स्कूलों में ई-मेल भेजी गई उसमें सेक्टर 46 और 43 स्थित एमिटी इंटरनेशनल स्कूल शामिल हैं। इन सभी स्कूलों में बम डिस्पोजल टीम के साथ पुलिस टीमों ने जांच अभियान चलाया।

परिवहन विशेष न्यूज

गुरुग्राम। दिल्ली-नोएडा के साथ-साथ गुरुग्राम के भी पांच स्कूलों में बम होने की ई-मेल भेजी गई थी। हालांकि, गुरुग्राम में किसी तरह का पैनिक नहीं फैला।

ई-मेल आने की जानकारी मिलने के बाद स्कूल प्रबंधनों ने दस बजे के बाद बच्चों को घर भेज दिया था।सूचना पर गुरुग्राम पुलिस ने बम निरोधक दस्ता के साथ स्कूलों में पहुंचकर जांच की थी। कहीं से कोई भी संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई।

इन पांच स्कूलों में भेजी गई धमकी

पुलिस सूत्रों के अनुसार गुरुग्राम के जिन पांच स्कूलों में बम होने की ई-मेल भेजी गई, उनमें सेक्टर 46 और 43 स्थित एमिटी इंटरनेशनल स्कूल, सेक्टर 102 व राजेंद्रा पार्क स्थित दिल्ली पब्लिक स्कूल और सेक्टर 57 स्थित वेंकटेशवर स्कूल शामिल हैं।

स्कूलों से सूचना मिलने के बाद गुरुग्राम पुलिस ने सुबह करीब दस बजे बम निरोधक दस्ता व डाग स्क्वायड के साथ मिलकर तलाशी अभियान चलाया। कहीं कोई भी संदिग्ध वस्तु बरामद नहीं हुई है।

गुरुग्राम पुलिस ने लोगों से अपील की है कि सुरक्षा को लेकर बिल्कुल भी चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। पुलिस स्कूलों को मिली ई-मेल के स्त्रोत की तलाश कर रही है। अभी तक जांच से पता चला है कि ई-मेल सिर्फ डर फैलाने के लिए भेजी गई थी।

बच्चों को स्कूल बस से ही भेजा घर

एमिटी स्कूल की प्रिंसिपल आरती चोपड़ा ने कहा कि उनके यहां सुबह जंक बाक्स में एक ई-मेल मिली थी। इसमें अजीब सी भाषा लिखी हुई थी। तब तक स्कूल शुरू हो गया था।

मेल की जानकारी होने के बाद बिना पैनिक के ही सभी बच्चों को बसों से उनके घर भेज दिया गया और अभिभावकों को सूचना दी गई। पुलिस को भी बुलाया गया था।

वहीं सुबह करीब सवा दस बजे डीपीएस सेक्टर 102 में बम निरोधक दस्ते के साथ धनकोट चौकी पुलिस पहुंची थी। यहां भी बच्चे नहीं थे। जानकारी यह भी मिली है कि डीपीएस प्रबंधन ने सभी छात्रों के अभिभावकों को मैसेज भेजकर जल्दी छुट्टी होने की सूचना दी थी।

शहर के स्कूलों में बम निरोधक दस्ते के साथ पुलिस टीमों ने जांच अभियान चलाया था। कहीं से कोई भी संदिग्ध वस्तु नहीं मिली। शहर के लोगों को सुरक्षा को लेकर बिल्कुल भी चिंतित होने की आवश्यकता नहीं है। दिल्ली तथा गुरुग्राम पुलिस प्राप्त हुई ईमेल के स्त्रोत की तलाश कर रही है।

-वरुण दहिया, एसीपी क्राइम

शिक्षा विभाग के डीबीटी पोर्टल से स्कूल ही गायब, 700 छात्रों को नहीं मिले 1200 रुपये

परिवहन विशेष न्यूज

डीबीटी की प्रक्रिया पूरी न होने के कारण छात्र सरकार से मिलने वाली राशि के लाभ से वंचित हो गए हैं। ऐसा ही एक मामला गौतमबुद्ध नगर में नोएडा के होशियारपुर में सामने आया है। प्रदेश के अन्य जिलों में भी इस तरह की गड़बड़ी सामने आई हैं। स्कूल के सात सौ छात्र सत्र 2023-24 में डीबीटी योजना के लाभ से वंचित रह गए।

ग्रेटर नोएडा। प्रदेश की योगी आदित्यनाथ की सरकार बेसिक शिक्षा परिषद के अंतर्गत पढ़ने वाले प्रत्येक छात्रों को हर साल डायरेक्ट बेनिफिट ट्रांसफर (डीबीटी) के तहत 1200 रुपये उनके अभिभावकों के खातों में भेज रही है, लेकिन डीबीटी पोर्टल पर कई स्कूलों के नाम ही गायब हैं।

डीबीटी की प्रक्रिया पूरी न होने के कारण छात्र सरकार से मिलने वाली राशि के लाभ से वंचित हो गए हैं। ऐसा ही एक मामला गौतमबुद्ध नगर में नोएडा के होशियारपुर में सामने आया है। प्रदेश के अन्य जिलों में भी इस तरह की गड़बड़ी सामने आई हैं।

कंपोजिट स्कूल होशियारपुर के करीब 700 छात्र बेसिक शिक्षा परिषद की लापरवाही के भेंट चढ़ गए। डीबीटी पोर्टल पर स्कूल अंकित न होने के कारण योजना में लाभ के लिए छात्रों का डाटा ही अपलोड नहीं हो सका। स्कूल के सात सौ छात्र सत्र 2023-24 में डीबीटी योजना के लाभ से वंचित रह गए।

स्कूल की प्रधानाचार्य ने कई बार मौखिक रूप से विभागीय अधिकारियों को परेशानियों से भी अवगत कराया। विभागीय अधिकारियों ने 15 जून 2022 को शासन पत्र भेजा। इसके बाद न तो शासन स्तर न जिला स्तर पर ठोस कदम उठाए गए।

अभिभावक डीबीटी की राशि के लिए स्कूल के चक्कर काटते रहे, पूरे सत्र उन्हें आश्वासन के अलावा कुछ नहीं मिला। शिक्षकों ने बताया कि प्रेरणा और डीबीटी पोर्टल पर स्कूल अंकित नहीं है। इसलिए डीबीटी की प्रकिया पूरी नहीं हो सकी। विभाग को इस संबंध में पहले ही अवगत कराया जा चुका है।

स्कूल बिसरख ब्लाक में, अंकित था जेवर ब्लाक में

होशियारपुर बिसरख ब्लाक के अंतर्गत है, लेकिन कंपोजिट स्कूल बनने से पहले यह जेवर ब्लाक के स्कूलों की सूची में अंकित था। कंपोजिट होने के बाद जेवर ब्लाक के स्कूलों की सूची से इसे हटा दिया। निपुण आंकलन परीक्षा में इसे बिसरख ब्लाक की सूची में अंकित किया गया। लेकिन प्रेरणा और डीबीटी पोर्टल पर यह स्कूल गायब है।

यू डायस पर भी दो स्कूल का एक विशिष्ट नंबर

बेसिक शिक्षा परिषद के यू डाइस पोर्टल पर होशियारपुर के दो स्कूल की एक ही विशिष्ट संख्या अंकित है। दो स्कूल दिखने से इस स्कूल में न ही खंड शिक्षा अधिकारी, न ही एआरपी और एसआरजी निरीक्षण कर पा रहे है।

एक यू डाइस संख्या पर उच्च प्राथमिक स्कूल होशियारपुर और कंपोजिट स्कूल होशियारपुर दिखाई दे रहा है। इस वजह से निरीक्षण आख्या दर्ज करना संभव नहीं है।

अभिभावकों का सरकारी योजना से उठा भरोसा

मजदूरी करने वाले अभिभावकों को योजना का लाभ नहीं मिलने से उनका सरकार से भरोसा उठ रहा है। अभिभावक राम नरेश का कहना है कि उनके बच्चों के ड्रेस, जूते मोजे आदि के लिए मिलने वाले रुपये नहीं मिले।

सरकार कहती है कि दो जोड़ी ड्रेस, जूते मोजे के पैसे खाते में भेजे हैं, लेकिन उन्हें एक रुपया भी नहीं मिला है। रकम उधार लेकर बच्चों को ड्रेस, जूते मोजे दिलाये थे। अभिभावक राकेश ने बताया कि विभाग में कई बार शिकायत की, आश्वासन के अलावा कुछ मदद नहीं मिली है।

1200 रुपये से यह खरीदते हैं अभिभावक

दो जोड़ी यूनिफार्म के लिए 600 रुपये, स्वेटर के लिए 200 रुपये, जूते-मोजे के लिए 125 रुपये और स्कूल बैग के लिए 170 रुपये मिलते हैं। इसके अलावा स्टेशनरी में चार कापियां, दो पेंसिल, दो रबर और दो कटर के लिए 105 रुपये खरीदने के लिए दी जाते हैं।

ऐसे स्कूल और बच्चों को चिह्नित किया जाएगा, कितने बच्चों को योजना का लाभ नहीं मिला है, क्यों नहीं मिल पाया है। इस मामले की जांच की जाएगी। बच्चों को योजना का लाभ दिलाया जाएगा।

प्रताप सिंह बघेल, निदेशक बेसिक शिक्षा विभाग

रोडरेज में दो पक्षों में जमकर मारपीट, दो लोग घायल; पुलिस जांच में जुटी

लोनी कोतवाली क्षेत्र राशिद अली गेट निठोरा मार्ग पर सोमवार रात रोडरेज के बाद दो पक्षों में कहासुनी और मारपीट हो गई। जिसमें दो लोग घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती करा मारपीट करने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया। निठौरा निवासी अशोक और सनी सोमवार शाम को लोनी बाजार से क्रेटा गाड़ी से अपने घर निठौर गांव जा रहे थे।

गाजियाबाद। लोनी कोतवाली क्षेत्र राशिद अली गेट निठोरा मार्ग पर सोमवार रात रोडरेज के बाद दो पक्षों में कहासुनी और मारपीट हो गई। जिसमें दो लोग घायल हो गए। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती करा मारपीट करने वालों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर आरोपितों की तलाश कर रही है। निठौरा निवासी अशोक और सनी सोमवार शाम को लोनी बाजार से क्रेटा गाड़ी से अपने घर निठौर गांव जा रहे थे। राशिद अली गेट के अंदर उनकी क्रेटा गाड़ी को मोड़ते समय टक्कर लगने से बाइक सवार फिरोज और इरसाद व एक अन्य के साथ कहासुनी के बाद मारपीट हो गई। मौके पर पहुंची पुलिस ने घायलों को अस्पताल में भर्ती कर फिरोज को हिरासत में लेकर अग्रिम विधिक कार्रवाई करने में जुटी है। सहायक पुलिस आयुक्त लोन सूर्यबली मौर्य ने बताया कि राशिद अली गेट के निकट दो पक्षों में मारपीट हुई है।

लोकसभा चुनाव में मुद्दों को नया विमर्श दें

ललित गर्ग

भाजपा की ओर से इन चुनावों में मोदी ही मुद्दा है। चुनाव अभियान का आरंभ करते हुए कहा गया कि नरेंद्र मोदी ही भारत को अधिक ऊंचा वैश्विक कद दिला रहे हैं। भारत मंडपम में जी 20 शिखर बैठक को भुनाने की कोशिश हुई। लेकिन यह भी मुद्दा चुनावी गणित में फिट नहीं हुआ।

लोकसभा चुनावों के प्रचार अभियान में एक आवाज बहुत धीमी पर एक वजन और पीड़ा के साथ सुनने को मिल रही है कि इस चुनाव को येन-केन-प्रकारेण जीतने के सभी जायज एवं नाजायक प्रयोग हो रहे हैं, लेकिन नैतिकता, मूल्य एवं आदर्श की बात कहीं भी सुनाई नहीं दे रही है। देश का राजनीतिक भविष्य तय करने वाले इन चुनावों में एक और विडम्बना देखने को मिल रही है कि राष्ट्र विकास के मुद्दों एवं आजादी के अमृतकाल को अमृतमय बनाने की कोई चर्चा नहीं है। देश को दिशा देने एवं कोई नया विमर्श खड़ा करने का नेताओं के पास अभाव है, जो अपने-आप में एक त्रासदी है। मतदाताओं की लोकतंत्र के महाकुंभ में भागीदारी का घटना भी एक चिन्ता का सबब है। जबकि किसी भी राष्ट्र के जीवन में चुनाव सबसे महत्त्वपूर्ण घटना होती है। यह एक यज्ञ होता है। लोकतंत्र प्रणाली का सबसे मजबूत पैर होता है।

विभिन्न राजनीतिक दल आरक्षण का मुद्दा खड़ा करके जहां अल्पसंख्यकों को अपनी ओर खींचने की कोशिश करते हुए भाजपा को आरक्षण विरोधी बता रहे हैं और गृहमंत्री अमित शाह के आरक्षण विषयक बयान को तोड़-मरोड कर झूठे एवं फेक वीडियो के माध्यम से भाजपा के चरित्र को धुंधला रहे हैं, वहीं आम महिलाओं के डर का सहारा लेते हुए उनके मंगल सूत्र और स्त्री धन को छीन लिए जाने की बात कही जा रही है। सैम पित्रोदा के विरासत कर संबंधी बयान से आम जनता के धन को हथियाने की बातें भी हो रही है। लेकिन प्रश्न है कि क्या कांग्रेस पार्टी के सत्ता में आने की संभावना है? सत्ता के सिंहासन पर अब कोई राजपुरोहित या राजगुरु नहीं अपितु जनता अपने हाथों से तिलक लगाती है। चुनाव अभियान तीसरे चरण की ओर अग्रसर हैं। सब राजनैतिक दल अपने-अपने 'घोषणा-पत्र' को ही गीता का सार व नीम की पत्ती बता रहे हैं, जो सब समस्याएं मिटा देगी तथा सब रोगों की दवा है।

एक-दूसरे की नीतियों एवं योजनाओं की आलोचना चुनाव का हिस्सा बनी हुई है और बनना भी चाहिए। लेकिन एक-दूसरे पर भीषण एवं भद्दे आरोप लगाना, लोकतंत्र की मर्यादा का उल्लंघन है। परंतु मौजूदा चुनाव प्रचार में राष्ट्रीय एकता एवं सामाजिक समरसता के ताने-बाने को क्षति पहुंचाने की चेष्टा का होना दुर्भाग्यपूर्ण है। सभी दल भाषणों में नैतिकता की बातें करते हैं और व्यवहार में अनैतिकता को छिपा रहे हैं। चुनाव आयोग के आंकड़ों की ही बात करें तो पिछले सप्ताह तक ही आचार संहिता उल्लंघन की 200 से अधिक शिकायतें आ चुकी है। जिनमें से 169 शिकायतों पर आयोग ने कार्रवाई की है। शिकायतों के आंकड़े बढ़ते ही जा रहे हैं। वास्तव में इन चुनावों में नेताओं ने भाषा एवं भावों को इतना बदरंग, अशालीन एवं भोंथरा कर दिया है कि शर्म-सी महसूस होती है।

दागी उम्मीदवारों के दागों का पर्दापाश होना भी इन चुनावों का हिस्सा है। कथित तौर पर प्रज्वल रेवन्ना से जुड़े वीडियो क्लिप प्रसारित होने से देखा गया है कि महिलाओं के खिलाफ यौन हिंसा की घटना हुई है। रेवन्ना के खिलाफ शिकायत कुछ महिलाओं के शोषण तक ही सीमित नहीं है, अब अनेकों शिकायतें सामने आएगी और हर शिकायत को ईमानदारी से परखना होगा। सबसे ज्यादा गंभीर बात तो यह है कि आरोपी जर्मनी भाग गया? अगर रेवन्ना दोषी हैं तो उन्हें कानून का सामना करना चाहिए। अगर वह कानून से भागेंगे तो इससे उनकी पार्टी और एनडीए दोनों को ही नुकसान होगा। रेवन्ना देश के पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवेगौड़ा के पौत्र है और उन पर लगे आरोप बहुत ही गंभीर और शर्मनाक है। सत्ता का किसी भी प्रकार का दुरुपयोग ज्यादा समय तक लाभकारी नहीं होता है। हमारा समाज ऐसे मुकाम पर आ गया है, जहां हम किसी महिला के साथ न ज्यादती की सुन सकते हैं और न किसी को करने दे सकते हैं। बात प्रज्वल रेवन्ना एवं बृजभूषण शरण सिंह तक सीमित नहीं हैं, विशेषतः चुनाव में ऐसे मुद्दों का उठना प्रासंगिक है, जिससे उम्मीदवारों को अपने गिरेबार में झांकने का अवसर मिलता है। राजनीतिक दलों को भी उम्मीदवारों का चयन करते हुए उनके चरित्र की परख गहराई से करनी ही चाहिए।

वर्ष 2024 के चुनावों में हम सात में से तीसरे चरण की ओर बढ़ रहे हैं, लेकिन अभी तक भाजपा की चुनावी थीम सामने नहीं आई है, विपक्षी दलों के घोषणा पत्रों या चुनावी बयानों की चीरफाड ही होती हुई दिख रही है। आतंकवादियों और दुश्मनों को उनके घर में घुसकर मारने की बात करने वाली भाजपा के बयानों में चीन पूरी तरह गायब है और पाकिस्तान का जिक्र भी बहुत कम है। निश्चित ही भाजपा जीत की ओर अग्रसर है, इसमें कोई संदेह नहीं है। लेकिन सुनिश्चित जीत के साथ सुनिश्चित भविष्य की बात भी होनी ही चाहिए। हकीकत में चुनाव में अनेक उतार-चढ़ाव के बावजूद मोदी का जादू चल रहा है, ऐसी अनेक वजहों से 2024 असाधारण रूप से बिना सशक्त मुद्दे के ही गतिमान है। आश्चर्य की बात यह है कि हमारी राष्ट्रीय राजनीति के मौजूदा दौर के सबसे बड़े जादूगर नरेंद्र मोदी ने अब तक इन चुनावों के लिए कोई सशक्त मुद्दा नहीं पेश किया है जो पहले से सातवें चरण तक चल सके। हर चुनावी चरण एवं सभा में एक नया मुद्दा उभर रहा है, जो कुछ दूर चल कर पृष्ठभूमि में चला जाता है।

भाजपा की ओर से इन चुनावों में मोदी ही मुद्दा है। चुनाव अभियान का आरंभ करते हुए कहा गया कि नरेंद्र मोदी ही भारत को अधिक ऊंचा वैश्विक कद दिला रहे हैं। भारत मंडपम में जी 20 शिखर बैठक को भुनाने की कोशिश हुई। लेकिन यह भी मुद्दा चुनावी गणित में फिट नहीं हुआ। महिला मतदाताओं को लुभाने का दांव भी चला। निर्वाचन वाली संस्थाओं में महिलाओं के आरक्षण के लिए आनन-फानन में पारित कानून इसका हिस्सा था। लेकिन भाजपा के चुनाव प्रचार में इसका जिक्र भी नहीं सुनने को मिल रहा है। इन चुनावों में भी पार्टी के उम्मीदवारों में महिलाओं की हिस्सेदारी 16 फीसदी है। राम मंदिर की प्राण प्रतिष्ठा को भी चुनावों के लिहाज से गर्म मुद्दा माना गया था। इसके बावजूद विभिन्न राज्यों में भाजपा के नेताओं के चुनाव भाषणों पर नजर डालें तो पता चलता है कि उनमें इस पर जोर या इसका जिक्र नहीं है। यह मुद्दा हाल में तब उठा जब ऐसे संकेत मिले कि राहुल और प्रियंका गांधी राम मंदिर जा सकते हैं। कुछ सप्ताह पहले भारत रत्न की घोषणा का मुद्दा भी दूर तक नहीं चल सका। ऐसी अनेक उपलब्धियां एवं ऐतिहासिक कार्य हैं, जो मोदी के कद को ऊंचा तो बनाते हैं, लेकिन चुनाव की दिशा को एकदम एवं दूर तक प्रभावित नहीं कर पा रहे हैं।

बात राज्यों की हो या केन्द्र की, भ्रष्टाचार और सत्ता के दुरुपयोग पर चुनावों में चर्चा होनी ही चाहिए। भारत के मतदाता मिलकर सरकारों को जवाबदेह ठहराने में प्रमुख भूमिका निभाते हैं। लेकिन मौजूदा लोकसभा चुनाव के दूसरे चरण में मतदान 2019 की तुलना में 7 प्रतिशत कम हुआ है। यह एक चिंताजनक संकेत है और चुनावी प्रक्रिया से मतदाताओं के अलगाव को दर्शाता है। यह भाजपा के मतदाताओं में चली आई आत्मसंतुष्टि की ओर भी संकेत करता है, जो प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के तीसरे कार्यकाल को लेकर आश्वस्त हैं। हालांकि, इसका एक और पहलू यह भी है कि 2023 में, प्यू रिसर्च सेंटर ने भारतीय मतदाताओं का एक सर्वेक्षण किया था, जिसमें पता चला था कि 85 प्रतिशत लोगों ने भारत में सैन्य शासन या निरंकुश नेता का समर्थन किया था। क्या शासन के अच्छे तरीके के रूप में लोकतंत्र के समर्थन में गिरावट का ही परिणाम कम होता मतदान है? अगर मतदाता लोकतांत्रिक प्रक्रिया में अपना विश्वास खो रहे हैं तो यह भारत के लोकतंत्र और भविष्य के लिए चिंताजनक संकेत है। इससे निर्वाचित नेता भी जनता के प्रति जवाबदेही से मुक्त होने लगेंगे। भारत के मतदाताओं को समझना चाहिए कि पिछले सतहत्तर वर्षों में देश की सफलता उसके लोकतंत्र की सफलता पर ही आधारित रही है। इसलिये मतदाता को जागरूक होकर अधिकतम मतदान करना चाहिए। साथ-ही-साथ मतदाता अगर बिना विवेक के आंख मूंदकर मत देगा तो परिणाम उस उक्ति को चरितार्थ करेगा कि "अगर अंधा अंधे को नेतृत्व देगा तो दोनों खाई में गिरेंगे।"

अप्रैल 2024 का महीना टाटा मोटर्स के लिए रहा बेहतरीन, 30 दिन में हुई 47 हजार से ज्यादा गाड़ियों की बिक्री

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय कार बाजार में Tata Motors की ओर से कई बेहतरीन हैचबैक कार और एसयूवी को ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से April 2024 की बिक्री के आंकड़ों को सार्वजनिक किया गया है। कंपनी के मुताबिक बीते महीने में कितनी यूनिट्स की बिक्री हुई है और टाटा मोटर्स की ओर से कितने सेगमेंट में वाहनों को उपलब्ध करवाया जाता है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में प्रमुख कार कंपनी की लिस्ट में शामिल Tata Motors की ओर से April 2024 के दौरान हुई कुल बिक्री की जानकारी सार्वजनिक की गई है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि कंपनी की ओर से बीते महीने में कितनी कारों की बिक्री की गई है।

Tata Motors की April 2024 में कैसी रही बिक्री

Tata Motors की ओर से जानकारी दी गई है कि कंपनी ने April 2024 के दौरान कुल 47 हजार से ज्यादा यूनिट्स यात्री वाहनों की बिक्री की है। कंपनी को ईयर ऑन ईयर बेसिस पर दो फीसदी की ग्रोथ हासिल हुई है। भारतीय बाजार में कंपनी की ओर से बीते महीने में 47983 यूनिट्स की बिक्री की गई है। जबकि इसके पहले April 2023 में कंपनी ने 47107 यूनिट्स की बिक्री की थी। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी में आईसीई वाहनों के साथ ही इलेक्ट्रिक सेगमेंट के वाहन भी शामिल हैं। बीते महीने कंपनी ने देशभर में 6364 यूनिट्स इलेक्ट्रिक वाहनों की बिक्री की है।

कमर्शियल वाहनों की बिक्री में भी हुई बढ़ोतरी

यात्री वाहनों के साथ ही टाटा मोटर्स ने कमर्शियल वाहनों की बिक्री में भी बढ़ोतरी दर्ज की है। बीते महीने कंपनी की ओर से 29538 यूनिट्स कमर्शियल वाहनों की बिक्री की गई है। ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी ने अप्रैल 2023 में 22492 यूनिट्स वाहनों की बिक्री की थी। आंकड़ों के मुताबिक कमर्शियल वाहनों की बिक्री के मामले में कंपनी ने 31 फीसदी की ग्रोथ हासिल की है।

कैसा है पोर्टफोलियो

टाटा मोटर्स की ओर से पैसेंजर सेगमेंट में Tiago, Altroz, Tigor, Punch, Nexon, Harrier और Safari को पेट्रोल, डीजल इंजन के विकल्प के साथ ऑफर किया जाता है। इसके साथ ही कंपनी Tiago, Tigor, Nexon को Electric सेगमेंट में भी ऑफर करती है।

टोयोटा की बिक्री में हुई 32 फीसदी की बढ़ोतरी, अप्रैल 2024 में कंपनी ने बेची 20494 गाड़ियां

भारत में हैचबैक एसयूवी और एमपीवी और लग्जरी एमपीवी सेगमेंट में Toyota कई बेहतरीन कारों एसयूवी और एमपीवी को ऑफर करती है। कंपनी की ब्रिकी में ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 32 प्रतिशत की बढ़ोतरी दर्ज की गई है। टोयोटा भारत की ओर से देशभर में बीते महीने April 2024 के दौरान कितनी यूनिट्स की बिक्री की गई है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। जापान की प्रमुख कार निर्माता Toyota की कारों को भारतीय ग्राहक काफी ज्यादा पसंद करते हैं। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक बीते महीने कितनी यूनिट्स की बिक्री Toyota ने की है। इसके साथ ही ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी का कैसा प्रदर्शन रहा है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

Toyota की April 2024 में कैसी रही बिक्री

देश की प्रमुख वाहन निर्माताओं में शामिल Toyota ने बीते महीने भारतीय बाजार में पॉजिटिव ग्रोथ दर्ज की है। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक April 2024 के दौरान कुल 20494 यूनिट्स की बिक्री कंपनी ने की है। जबकि इससे पहले April 2023 के दौरान कंपनी की कुल बिक्री 15510 यूनिट्स की रही थी। आंकड़ों के मुताबिक कंपनी ने ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 32 फीसदी की ग्रोथ हासिल की है।

जनवरी से अप्रैल के बीच कैसा रहा प्रदर्शन

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस के साथ ही टोयोटा ने जनवरी से अप्रैल के बीच भी 48 फीसदी की बढ़ोतरी को हासिल किया है। जनवरी से अप्रैल 2024 के बीच कंपनी ने कुल 97503 यूनिट्स की बिक्री की, जबकि जनवरी से अप्रैल 2023 के बीच कंपनी ने 65871 यूनिट्स की देशभर में बिक्री की थी।

कैसा है पोर्टफोलियो

टोयोटा की ओर से भारतीय बाजार में 11 वाहनों को ऑफर करती है। कंपनी हैचबैक के तौर पर Glanza को ऑफर किया जाता है। लग्जरी सेडान के तौर पर Camry को पेश किया जाता है। जबकि MPV सेगमेंट में कंपनी सबसे ज्यादा विकल्प ऑफर करती है। इस सेगमेंट की शुरूआत Rumion से होती है और इसके बाद Innova Crysta, Innova Hycross को ऑफर किया जाता है। लग्जरी MPV सेगमेंट में कंपनी Vellfire को ऑफर करती है। हैचबैक, सेडान और एमपीवी के अलावा कंपनी एसयूवी सेगमेंट में Urban Cruiser Hyryder, Fortuner, Legender, Land Cruiser 300 को बिक्री के लिए उपलब्ध करवाती है। लाइफस्टाइल सेगमेंट में टोयोटा की ओर से Hilux को ऑफर किया जाता है।

अप्रैल 2024 में MG मोटर्स की बिक्री में आई मामूली गिरावट, EV वाहनों की बढ़ी मांग, जानें डिटेल

भारत में कई बेहतरीन एसयूवी और Electric Cars को ब्रिटिश वाहन निर्माता MG Motors की ओर से ऑफर किया जाता है। April 2024 कंपनी के लिए ब्रिकी के मामले में कैसा रहा है। बीते महीने कंपनी ने कुल कितनी यूनिट्स की बिक्री की है। कंपनी की कुल बिक्री में इलेक्ट्रिक कार और एसयूवी का कितना योगदान रहा। आइए जानते हैं।

भारत में कई बेहतरीन एसयूवी और Electric Cars को ब्रिटिश वाहन निर्माता MG Motors की ओर से ऑफर किया जाता है। April 2024 कंपनी के लिए ब्रिकी के मामले में कैसा रहा है। बीते महीने कंपनी ने कुल कितनी यूनिट्स की बिक्री की है। कंपनी की कुल बिक्री में इलेक्ट्रिक कार और एसयूवी का कितना योगदान रहा। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। ब्रिटेन की प्रमुख कार निर्माता MG की भारतीय ईकाई की ओर से कई बेहतरीन कारों और एसयूवी को देश में ऑफर किया जाता है। कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक बीते महीने कितनी यूनिट्स की बिक्री MG Motors ने की है। इसके साथ ही कंपनी की कुल बिक्री में Electric Cars का कितना योगदान रहा है। हम इसकी जानकारी आपको इस खबर में दे रहे हैं।

MG Motors की April 2024 में कैसी रही बिक्री

MG Motors ने बीते महीने भारतीय बाजार में कुल 4485 यूनिट्स की बिक्री की है। जबकि इससे पहले March 2024 के दौरान कंपनी ने 4648 यूनिट्स की बिक्री की थी। लेकिन कंपनी की Electric Cars को भारत में काफी पसंद किया जा रहा है। जानकारी के मुताबिक कंपनी की कुल बिक्री में इलेक्ट्रिक कारों का योगदान 34 फीसदी हो गया है। कंपनी से मिली जानकारी के मुताबिक कुछ समय पहले लॉन्च हुई Hector BlackStorm को ग्राहकों की ओर से अच्छी प्रतिक्रिया मिल रही है।

ईयरली बेसिस पर कैसा रहा प्रदर्शन

एमजी मोटर्स ने अप्रैल 2024 के दौरान 4485 यूनिट्स की बिक्री की है। वहीं अप्रैल 2023 के दौरान कंपनी ने कुल 4451 यूनिट्स की बिक्री की थी। आंकड़ों के मुताबिक ईयर ऑन ईयर बेसिस पर कंपनी ने बिक्री के मामले में 1.45 फीसदी की नेगेटिव ग्रोथ हासिल की है।

कैसा है पोर्टफोलियो

एमजी मोटर्स की ओर से भारतीय बाजार में पांच वाहनों को ऑफर करती है। कंपनी की ओर से देश की सबसे सस्ती Electric Car के तौर पर Comet EV को ऑफर किया जाता है। इसके अलावा कंपनी इलेक्ट्रिक सेगमेंट में ZS EV को भी ऑफर करती है। इलेक्ट्रिक के साथ ही कंपनी की ओर से Astor, Hector और Gloster एसयूवी को भी भारतीय बाजार में ऑफर किया जाता है।

अमेरिकी कंपनी हार्ले डैविडसन ने भारत में लॉन्च की ये बाइक्स, मौजूदा बाइक्स की नई कीमतें भी हुई जारी

अमेरिका की बाइक निर्माता Harley Davidson की ओर से भारत में नई बाइक स को लॉन् च किया गया है। इसके साथ ही कंपनी की ओर से मौजूदा बाइक स की नई कीमतों को भी जारी कर दिया गया है। कंपनी ने किस बाइक को लॉन् च और पेश किया है और अब किस कीमत पर कंपनी की बाइक स को खरीदा जा सकता है।

नईदिल्ली। अपनी दमदार बाइक्स के लिए दुनियाभर में पहचान बनाने वाली कंपनी Harley Davidson की ओर से भारत में अपने पूरे पोर्टफोलियो की नई कीमतों को जारी कर दिया गया है। इसके साथ ही कंपनी की ओर से नई बाइक्स को भी पेश किया गया है। हम इस खबर में आपको हॉर्ले डेविडसन की ओर से भारत में ऑफर की जाने वाली बाइक्स की कीमतों की जानकारी दे रहे हैं।

हार्ले डेविडसन की बाइक्स हुई लॉन्च

दमदार इंजन और बाइक्स को पसंद करने वालों के बीच Harley Davidson काफी जाना पहचाना नाम है। कंपनी की ओर से कुछ नई बाइक्स को हाल में ही भारतीय बाजार में लॉन्च किया गया है। कंपनी की ओर से ब्रेकआउट 117 को दोबारा से पेश कर दिया गया है। इसके अलावा रोड ग्लाइड और स्ट्रीट ग्लाइड टूरर्स बाइक्स के भी 2024 वेरिएंट्स को लॉन्च किया गया है। भारतीय बाजार में कंपनी हीरो मोटोकॉर्प के साथ मिलकर अपनी बाइक्स की बिक्री करती है।

क्या हैं खूबियां

2024 स्ट्रीट ग्लाइड और रोड ग्लाइड बाइक्स को पहले के मुकाबले ज्यादा शक्तिशाली, हल्का और ज्यादा डायनैमिक बनाया गया है। इन दोनों मॉडल्स में एक डेवलप फेयरिंग प्रोफ़ाइल है जो काफी आधुनिक दिखाई देती है फिर भी हार्ले-डेविडसन डिज़ाइन डीएनए को बरकरार रखती है। इनमें कंपनी की ओर से अपेडट के साथ मिल्वॉकी-आठ 117 वी-ट्विन इंजन को दिया गया है।

क्रेटा और एक्स्टर के जरिए हुंडई की बिक्री बढ़ी, जानें अप्रैल 2024 में कैसा रहा प्रदर्शन

परिवहन विशेष न्यूज

भारतीय कार बाजार में Hyundai Motors (HMIL) की ओर से कई बेहतरीन हैचबैक कार और एसयूवी को ऑफर किया जाता है। हुंडई मोटर्स की ओर से April 2024 की बिक्री के आंकड़ों को सार्वजनिक किया गया है। कंपनी के मुताबिक बीते महीने में कितनी यूनिट्स की बिक्री हुई है और कितनी यूनिट्स को एक्सपोर्ट किया गया है। आइए जानते हैं।

नई दिल्ली। देश में प्रमुख कार कंपनी की लिस्ट में शामिल Hyundai Motors की ओर से April 2024 के दौरान हुई कुल बिक्री की जानकारी सार्वजनिक की गई है। हम इस खबर में आपको बता रहे हैं कि कंपनी की ओर से बीते महीने में कितनी कारों की बिक्री की गई है।

Hyundai की April 2024 में कैसी रही बिक्री

हुंडई मोटर्स की ओर से जानकारी दी गई है कि कंपनी ने April 2024 के दौरान कुल 63701 यूनिट्स की बिक्री की है। कंपनी को ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 9.5 फीसदी की ग्रोथ हासिल हुई है। भारतीय बाजार में कंपनी की ओर से 50201 यूनिट्स की बिक्री की गई है। जबकि कंपनी ने बीते महीने में 13500 यूनिट्स को एक्सपोर्ट किया है। एक्सपोर्ट के मामले में कंपनी को ईयर ऑन ईयर बेसिस पर 58.8 फीसदी की बढ़त मिली है।

एसयूवी सेगमेंट से बढ़ी बिक्री

हुंडई मोटर इंडिया के सीओओ तरूण गर्ग ने बताया कि अप्रैल 2024 में, हुंडई मोटर इंडिया ने CY 24 के दौरान घरेलू बिक्री में लगातार चौथे महीने 50,000 से ज्यादा यूनिट्स की बिक्री की उपलब्धि को हासिल किया है। कंपनी को CRETA, VENUE और EXTER जैसे मॉडल्स की बदौलत घरेलू बिक्री में 67% का योगदान मिला है।

जनवरी से अप्रैल के बीच कैसी रही मांग

कंपनी की ओर से दी गई जानकारी के मुताबिक जनवरी से अप्रैल 2024 के बीच कुल 257418 यूनिट्स की बिक्री हुई है। जबकि जनवरी से अप्रैल 2023 के बीच कंपनी ने 239828 यूनिट्स की बिक्री की थी। वहीं जनवरी से अप्रैल 2024 के दौरान कंपनी ने 46900 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया है, जबकि पिछले साल इसी अवधि में कंपनी ने 42420 यूनिट्स का एक्सपोर्ट किया था।

कैसा है पोर्टफोलियो

कंपनी की ओर से भारतीय बाजार में सबसे सस्ती कार के तौर पर ग्रैंड नियोस आई-10 को ऑफर किया जाता है। इसके अलावा कंपनी i-20, Exter, Aura, Verna, Venue, Creta, Alcazar, Tucson, Kona Electric और Ioniq5 Electric को भी ऑफर करती है।

पैसे और राजनीति का इश्क

डा. वरिंद्र भाटिया

चुनावी मौसम सुहावना हो रहा है, इस दिलकश माहौल में दौलत के तडके की संभावना का इंकार करना कठिन है। यूं भी राजनीति में पैसे का महत्व लगभग हमेशा से रहा है। बिरले ही बिना पैसे के मात्र अपने मेहनत, समाज सेवा, भाषण देने की कला के आधार पर सफल हुए। इस क्षेत्र में एजुकेशन का तो कोई महत्व नहीं है, हालांकि संविधान में सभी को बराबरी का हक है, लेकिन आज की राजनीति में जाति और धर्म का महत्व है जिससे जाति और धर्म के संख्याबल के आधार पर वोट बैंक की राजनीति हो सके।

कुछ मायनों में दिए गए कुछ तर्क ठीक हैं, लेकिन ध्यान रहे कि पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती। यह सिर्फ भ्रष्ट नेताओं के संदर्भ में सही होगा। जो नेता ईमानदार हैं और ईमानदारी से कार्य करते रहे हैं, उनके लिए राजनीति जनसेवा है, देशसेवा है। उदाहरण के लिए स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी, स्वर्गीय अटल जी इत्यादि जिनके ऊपर एक भी पैसे का दाग नहीं है। इन सबके अलावा आज और भी ऐसे ईमानदार नेता लोग हैं, लेकिन बहुत कम हैं। दरअसल, यह ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति के चुनकर आने का वास्तविक रहस्य समाज पर वैचारिक प्रभाव है। जिन विचारों का समाज पर अधिक प्रभाव रहता है, उन विचारों को मानने वाले व्यक्ति चुनावों में जीतकर आते रहते हैं और सत्ता भी उसी विचार को मानने वाली पार्टी के पास जाती है'

चुनावी मौसम सुहावना हो रहा है, इस दिलकश माहौल में दौलत के तडक़े की संभावना का इंकार करना कठिन है। यूं भी राजनीति में पैसे का महत्व लगभग हमेशा से रहा है। बिरले ही बिना पैसे के मात्र अपने मेहनत, समाज सेवा, भाषण देने की कला के आधार पर सफल हुए। इस क्षेत्र में एजुकेशन का तो कोई महत्व नहीं है, हालांकि संविधान में सभी को बराबरी का हक है, लेकिन आज की राजनीति में जाति और धर्म का महत्व है जिससे जाति और धर्म के संख्याबल के आधार पर वोट बैंक की राजनीति हो सके। राजनीति और पैसे के इश्क की कहानी दिलचस्प है। चुनावी मौसम में अखबार, टीवी और होर्डिंग्स पर पार्टियों और प्रत्याशियों के विज्ञापनों की भरमार रहती है। लेकिन सवाल यह है कि इन पार्टियों के पास ये पैसा आखिर आता कहां से है? लेकिन कुछ महीने पहले एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स की एक रिपोर्ट आई थी, जिसमें कहा गया कि देश की पांच राष्ट्रीय पॉलिटिकल पार्टियों को जो कुछ पैसा मिला, उसमें से 53 फीसदी रकम का स्रोत पता नहीं था। यानी ये अज्ञात स्रोतों से थी। पार्टियों की 36 फीसदी आय ज्ञात स्रोतों से आई थी और सिर्फ 11 फीसदी रकम ही मेंबरशिप फीस आदि से जुटाई गई। यानी पार्टियों के खजाने में बेनामी चंदे की भरमार है। चुनावी चंदे में पारदर्शिता के नाम पर व्यवस्था ने राजनीतिक चंदे की प्रक्रिया में तीन बड़े बदलाव किए। पहला, अब राजनीतिक पार्टियां विदेशी चंदा ले सकती हैं। दूसरा, कोई भी कंपनी कितनी भी रकम, किसी भी राजनीतिक पार्टी को चंदे के रूप में दे सकती है, और तीसरा, कोई भी व्यक्ति या कंपनी गुप्त रूप से चुनावी बॉन्ड के जरिए किसी पार्टी को चंदा दे सकती है।

हो सकता है पहले भी कुछ लोग राजनीति में सेवा के उद्देश्य से आते थे और आज भी कुछ लोग सेवा के उद्देश्य से ही आते होंगे, लेकिन पहले भी अधिकांश लोगों ने सेवा के नाम पर राजनीति का फायदा दौलत समेटने के लिए किया है, और आज तो लगभग सभी लोग, इक्के-दुक्के को छोडक़र राजनीति को पैसा कमाने का जरिया बना चुके हैं। विदेशों में पॉलिटिकल फंडिंग के अपने दस्तूर हैं। अमरीका में अलग-अलग तरह के डोनर्स के लिए अलग-अलग लिमिट तय है। हालांकि थर्ड पार्टी पॉलिटिकल फंडिंग से जुड़े नियम ज्यादा सख्त नहीं हैं, लिहाजा बड़े पैमाने पर पैसा खर्च होता है। अमरीका में सिएटल के लोकल चुनावों में डेमोक्रेसी वाउचर का सिस्टम शुरू किया गया था। सरकार वोटरों को कुछ रकम के वाउचर देती है, जिसे वे अपनी पसंद के कैंडिडेट को चंदे में दे सकते हैं। ब्रिटेन में चंदे की कोई लिमिट नहीं है, लेकिन चुनाव खर्च की सीमा है। पार्टियां प्रति सीट 54 हजार पौंड (57.02 लाख रुपए) से अधिक नहीं खर्च कर सकतीं। यह सीमा पोलिंग डे से पहले के सालभर के दौरान हुए खर्च पर है। ब्रिटेन में किसी सिंगल सोर्स से कैलेंडर ईयर में 7500 पौंड (7.92 लाख रुपए) से ज्यादा रकम मिलने पर उसका खुलासा करना होता है। यूरोपियन यूनियन ने 2014 में यूरोप के राजनीतिक दलों की फंडिंग से जुड़े नियम बनाए थे। डोनेशन की लिमिट तय करने के साथ बड़ी रकम के खुलासे से जुड़े नियम बनाए थे। जर्मनी में पार्टियों को चुनाव लडऩे के लिए सरकार से पैसा मिलता है। पिछले चुनावों में मिले वोटों और पार्टी मेंबरशिप के आधार पर सरकारी फंडिंग होती है। जर्मनी में किसी सिंगल सोर्स से कैलेंडर ईयर में 10 हजार यूरो से अधिक रकम मिलने पर उसका खुलासा करना होता है। यह तो जगजाहिर हो चुका है कि देश में अधिकतर राजनीति का व्यापारीकरण हो गया है।

और यह व्यापार मुफ्त का व्यापार है, इसमें शानो शौकत है, मान और सम्मान है। कुछ पैसा लगाना पड़ता है तो उसका रिटर्न भी अच्छा मिलता है। राजनीति के जरिये पैसा बनाने वालों के अपने तर्क हैं। ये लोग कहते हैं कि क्यों न राजनीति के जरिये पैसे कमाएं, जब चुनाव लडऩे के लिए अथाह धन खर्च करना पड़ता है। ये भी नहीं है कि एक बार जीत गए तो पूरा जीवन नहीं लडऩा पड़ेगा। सिर्फ पांच साल ही मिलेंगे। चुनाव लडऩे के लिए थोड़ी तैयारी भी करनी पड़ती है। पता लगा कि मेहनत तो सारी कुएं में चली गई क्योंकि हाईकमान में मौजूद किसी असरदार नेता के चलते कोई दूसरा व्यक्ति टिकट ले गया। फिर निर्दलीय चुनाव लडऩा पड़ा तो खर्चा और मेहनत दुगना, और पार्टी से बगावत अलग। ये लोग यह भी कहते हैं कि चुनाव प्रचार के लिए गाडियों व कार्यकर्ताओं की फौज, गाडियों के लिए ईंधन और कार्यकर्ता के भोजन-दारू की व्यवस्था अत्यंत आवश्यक नहीं तो कोई भी साथ नहीं चलेगा। चुनाव क्षेत्र के मतदाताओं की लिस्ट व जातीय समीकरण के हिसाब से हर जगह सुबह 6 से रात 10 बजे प्रचार के लिए जाना कुछ क्षेत्र के ऐसे मतदाताओं की वोट तभी 'पक्की' मानी जाती है जब उन्हें चुनाव से पहले की रात तक लगातार दारू की बोतल और उनके परिवार के अन्य सदस्यों की मांगें पूरी होती रहेंगी। चुनाव कार्यालय के आसपास एक ऐसी जगह फिक्स होती है जहां कार्यकर्ताओं के लिए खाने-पीने के लिए 24 घंटे का बाकायदा हलवाई बिठाकर पूरा बंदोबस्त रहता है।

कुछ कार्यकर्ताओं की भी फीस अलग अलग तरह की होती है। कई तो भाषण विशेषज्ञ होते हैं, नेता कुछ बोले, न बोले, वो नेता जी के लिए एक से बढक़र एक विशेषण शब्द बोलते हैं। कुल मिला कर चुनाव में जुटे सारे कार्यकर्ता पैसे से ही बुलाए जाते हैं। अब इतना खर्च करके कौन 'वसूली' नहीं करना चाहेगा। कुछ मायनों में दिए गए कुछ तर्क ठीक हैं, लेकिन ध्यान रहे कि पांचों उंगलियां बराबर नहीं होती। यह सिर्फ भ्रष्ट नेताओं के संदर्भ में सही होगा। जो नेता ईमानदार हैं और ईमानदारी से कार्य करते रहे हैं, उनके लिए राजनीति जनसेवा है, देशसेवा है। उदाहरण के लिए स्वर्गीय लाल बहादुर शास्त्री जी, स्वर्गीय अटल जी इत्यादि जिनके ऊपर एक भी पैसे का दाग नहीं है। इन सबके अलावा आज और भी ऐसे ईमानदार नेता लोग हैं, लेकिन बहुत कम हैं। दरअसल, यह ध्यान में रखना चाहिए कि किसी भी व्यक्ति के चुनकर आने का वास्तविक रहस्य समाज पर वैचारिक प्रभाव है। जिन विचारों का समाज पर अधिक प्रभाव रहता है, उन विचारों को मानने वाले व्यक्ति चुनावों में जीतकर आते रहते हैं और सत्ता भी उसी विचार को मानने वाली पार्टी के पास जाती है। चुनाव जीतने के लिए विचारों का महत्व अधिक है। विचारों से आंदोलन होता है और आंदोलन से राजनीतिक दशा और दिशा बदलती है। इसलिए यह कहना कि राजनीति के लिए बहुत पैसा चाहिए, गैर-वाजिब ही है।

संपादकीय

कीर्तिमानों के बावजूद

हिमाचल प्रदेश स्कूल शिक्षा बोर्ड की जमा दो परीक्षा के परिणामों को समझें तो प्रदेश की आगामी पीढ़ी के मंतव्य, महत्त्वाकांक्षा, जीवन और करियर के प्रति प्रतिबद्धता तथा राष्ट्रीय परिप्रेक्ष्य में पहाड़ी राज्य की उम्मीदें उजागर होती हैं। यहां नारी जगत के शिखर ऊंचे और गांव स्तर तक शिक्षा का प्रसार अपनी गुणवत्ता दिखा रहा है। ओवरऑल टॉप-10 मेरिट सूची में 41 बच्चों के बीच 30 लड़कियों का आगे रहना हिमाचल की पारिवारिक और सामाजिक पृष्ठभूमि का अद्भुत उदाहरण है। कहना न होगा कि करीब 75 प्रतिशत निजी स्कूलों के बदौलत हिमाचल की शिक्षा अपने श्रेष्ठ बिंदुओं तक पहुंच पा रही है। शिक्षा विभाग अपने स्कूल की चारदीवारी और सरकारी स्कूलों का शिक्षक वर्ग अपनी तैयारी का मुआयना करे, तो मालूम होगा कि इमारतों के भीतर धुंध ने कहीं प्रकाश रोके रखा है। तीनों संकायों की मेरिट सूची के कुल 90 में से बेटियों के उज्ज्वल स्थान के मुकाबले बेटे सिर्फ 22 जगह पर ही डटे हैं, तो यही वजह है कि हम शैक्षणिक प्रगति में हर स्थान पर बेटी को देख रहे हैं। हालांकि जमा दो के परीक्षा परिणामों की कुल जमा राशि में अभी एक चौथाई बच्चे असफलता की हताशा में खड़े हैं। जाहिर तौर पर इस संख्या में सरकारी स्कूलों की काबिलीयत और सुदूर इलाकों की शिक्षा का आंकड़ा दुरुस्ती मांग रहा है। तमाम कीर्तिमानों के बावजूद शिक्षा ने सामाजिक उपलब्धता को दो पाटों में बांट रखा है। हिमाचल का एक संपन्न वर्ग सरकारी स्कूलों को ठुकरा कर निजी क्षेत्र पर भरोसा कर रहा है। यही अंतर आगे चलकर सीबीएसई तथा आईसीएसई के परीक्षा परिणामों में इस खाई को और चौड़ा कर सकता है। यानी शिक्षा की प्रगतिशील पायदान पर निजी स्कूलों ने हिमाचल की मंजिलें और मकसद छीन लिए हैं। ऐसे में शिक्षा विभाग के पद और पदक तथा आंकड़ों के सारे हिसाब कहीं न कहीं गुणवत्ता का प्रश्न तो पैदा करते ही हैं। यह मुकाबला विश्वसनीयता को भी कहीं टांग रहा है। आश्चर्य यह कि अधोसंरचना के हिसाब से शहरी स्कूलों की छत भी शिक्षा की विश्वसनीयता को प्रश्रय देने में असफल साबित हो रही है। ऐसे में कम से कम पांच से छह दर्जन शहरी स्कूलों को अगर चिन्हित करके पब्लिक-प्राइवेट पार्टनरशिप के तहत चलाया जाए, तो मेरिट की सूचियां इन परिसरों में भी आबाद होंगी। इतना ही नहीं, कुछ सरकारी स्कूलों को सीबीएसई तथा आईसीएसई के अंतर्गत चला कर भी अभिभावकों की रुचि बढ़ाई जा सकती है। शिक्षा विभाग को विशेष सर्वेक्षणों के तहत हिमाचल के शिक्षा परिदृश्य की व्याख्या करनी चाहिए। मसलन मेरिट में अभिभावकों के व्यवसाय तथा प्रेरणा के स्रोत चिन्हित हों, तो मालूम हो जाएगा कि सरकारी स्कूलों के अध्यापक अपने बच्चों को मेरिट में लाने के लिए कितने और कहां पापड़ बेल रहे हैं। बेशक जमा दो की उपलब्धियों में हम करियर के बनते-बिगड़ते सपने देख रहे हैं, लेकिन इस परीक्षा परिणाम के बाद एक नए जहां में छात्र खड़े होते हैं और जहां प्रदेश की उच्च शिक्षा के हालात भी नजर आते हैं। सरकारी स्कूलों के आगे, कालेजों, इंजीनियरिंग-डाक्टरी कालेजों व विश्वविद्यालयों के जखीरे का झुठला कर बुलंदी के असली पैमाने अगर राज्य से बाहर और निजी संस्थानों में तय हो रहे हैं, तो हैरत है कि हमारी शिक्षा नीति किस मुगालते में है। कम से कम मेरिट में आ रहे बच्चों के इरादों को शिक्षा प्रदान करने में सरकारी संस्थान मदद नहीं कर रहे। किसी को सीए, किसी को वैज्ञानिक शोध, किसी को कानून की पढ़ाई, तो किसी को सैन्य सेवाओं में भविष्य देखना है, तो वह राज्य के बाहर जाने को आमादा है। दर्जनों इंजीनियरिंग व कामर्स एवं बिजनेस स्कूल खोलकर भी हिमाचल कारपोरेट जगत की डिमांड के योग्य नहीं, तो प्रदेश की मेरिट का ब्रेन ड्रेन तय है। बहरहाल जमा दो परीक्षा के परिणाम बता रहे हैं कि प्रदेश में शिक्षा के हब बैजनाथ, बजौरा, चुवाड़ी, पांवटा साहिब व चंबा तक अपने प्रतिमान बना रहे हैं।

राय

यौन शोषण का जन-सेवक

प्रथमद्रष्ट्या जेहन में सवाल उठता है कि वह इनसान है या भेडिया अथवा कोई हवसी जानवर है? हालांकि अभी आरोप हैं। यही कानून की अधूरी भाषा है, लेकिन क्या सभी 2976 वीडियो फर्जी, संपादित हो सकते हैं? ये वीडियो एक पेन ड्राइव में उपलब्ध हैं। जिन महिलाओं का यौन-शोषण किया गया है या मानसिकता अश्लील थी, वे सभी घर की सेविकाएं थीं। यानी घर के भीतर ही दुराचार, जघन्य अपराध किया जाता रहा। ये हरकतें अक्षम्य हैं। देश के पूर्व प्रधानमंत्री एच.डी. देवगौड़ा के चेहरे और चिर संचित प्रतिष्ठा पर भी कालिख पोत दी गई है, क्योंकि उनका बड़ा बेटा एच.डी. रेवन्ना और पौत्र प्रज्ज्वल रेवन्ना दोनों पर ही पाशविकता का कलंक लगा है। दोनों ही जन-प्रतिनिधि हैं। प्रज्ज्वल ने तो जद-एस और भाजपा के साझा उम्मीदवार के तौर पर कर्नाटक की हासन सीट से चुनाव लड़ा है। बीती 26 अप्रैल को मतदान हुआ और 27 अप्रैल को भगोड़े की तरह जर्मनी चले जाना, यह साफ दर्शाता है कि वह अपराधी, बलात्कारी, यौन-शोषक के किरदार में है। यदि वह सिर्फ आरोपित होता, तो यहीं रहकर उसे कानूनी लड़ाई लडऩी चाहिए थी। सवाल कर्नाटक राज्य की कांग्रेस सरकार पर भी है कि जब यौन-शोषण के अश्लील वीडियो सार्वजनिक हो चुके थे, तो प्रज्ज्वल को हिरासत में लेकर पूछताछ क्यों नहीं की गई? उसे तब तक हिरासत में रखा जाना चाहिए था, जब तक अधिकतर पीड़िताओं के पक्ष दर्ज नहीं होते।

ऐसा लगता है कि सभी राजनेता और दल एक-दूसरे के 'कवच' हैं। कमोबेश ऐसे मामलों में आपस में रक्षा करते हैं! चूंकि निवर्तमान सांसद प्रज्ज्वल जर्मनी भाग गया है, तो विशेष जांच दल की पड़ताल भी अधूरी रहेगी। लगातार सवाल उठते रहेंगे कि विदेश भागने में किसने मदद की? भाजपा की तरफ ही उंगली उठती रहेगी। दरअसल ये शर्मनाक पल भाजपा-जद (एस) दोनों के लिए हैं, क्योंकि उनके नेतृत्व को दिसंबर, 2023 से ही जानकारी थी कि प्रज्ज्वल के अश्लील वीडियो कांग्रेस के हाथों में पहुंच चुके हैं और वह उन्हें 'ब्रह्मास्त्र' की तरह इस्तेमाल कर सकती है। बताया जा रहा है कि प्रज्ज्वल ने कुल 200 महिलाओं का यौन-शोषण किया और खुद ही वीडियो शूट करता रहा। कितना मनोविकारी लगता है वह! उसकी हरकतें कितनी खौफनाक और आपत्तिजनक रही होंगी कि सेविकाएं उसे देखकर घर के स्टोर रूम में छिप जाती थीं! यह देवगौड़ा परिवार का घर था अथवा कोई जबरन हरम था! बहरहाल नेताओं में यौन-उत्पीडऩ का एक और मामला सार्वजनिक हुआ है, तो वह न्यायिक निष्कर्ष तक पहुंचना चाहिए। प्रथमद्रष्ट्या सब कुछ प्रज्ज्वल और उसके पिता रेवन्ना की 'काली करतूतों' पर ही केंद्रित है। भारत सरकार ने तीन महत्वपूर्ण कानूनों में जो संशोधन कर एक नई न्याय प्रणाली बनाई है, तो उसी के तहत, अपराध के मुताबिक, दंडात्मक कार्रवाई भी की जानी चाहिए। लीपापोती और टालने की कुछ भी गुंजाइश नहीं है। कर्नाटक महिला आयोग ने इसे 'सबसे बड़ा सैक्स स्कैंडल' करार दिया है। अब संस्कृति और धर्म-शास्त्रों की दुहाई देना भी छोड़ देना चाहिए कि देश में महिलाओं को 'देवी' का दर्जा प्राप्त है। उनके बिना कोई भी यज्ञ सम्पन्न नहीं हो सकता। जहां औरतों को पूजा जाता है, वहीं देवता वास करते हैं। यह भी भूल जाना चाहिए कि महिलाओं को पंचायत, स्थानीय निकायों, विधानसभा और संसद में 33 फीसदी आरक्षण देने से उनका दर्जा बढ़ेगा और वे पुरुष के समकक्ष होती जाएंगी। इस मुगालते में नहीं रहना चाहिए, क्योंकि इस अश्लील संदर्भ से साबित होता है कि घर की सेविकाएं भी 'उपभोग की वस्तु' हैं।

चुनावी ड्यूटी में आवश्यक सतर्कता

इस प्रक्रिया में हर समय नियमों के दायरे में रहते हुए अपने स्तर पर कत्र्तव्यों को सुनिश्चित करने के लिए कुशलतापूर्वक सफल प्रबंधन करना चाहिए तथा अपनी मनमर्जी से बचना चाहिए'

चुनाव की ही जमीन पर महान भारतीय लोकतंत्र खड़ा है। चुनाव लडऩे वाले उम्मीदवार, मतदान करने वाले मतदाता तथा चुनाव आयोजित करवाने वाले अधिकारी, कर्मचारी एवं सुरक्षा कर्मी सभी भारतीय हैं। ये सभी लोग भारतीय लोकतंत्र को मजबूत करने का काम करते हैं। जहां मतदान करना संवैधानिक कत्र्तव्य है, वहीं पर मतदान प्रक्रिया को निष्पक्ष तथा पारदर्शी तरीके से सम्पन्न करवाना भी महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कत्र्तव्य है। लोकसभा तथा विधानसभा चुनावों के दौरान अनेकों कर्मचारी, सुरक्षा कर्मी तथा अधिकारी इस प्रक्रिया को सम्पन्न करवाने के लिए जी-जान से कार्य करते हैं। यह कार्य असम्भव तो नहीं, लेकिन इस प्रक्रिया की जवाबदेही होना चुनौतीपूर्ण अवश्य है। चुनावों के दौरान सारी प्रशासनिक शक्तियां भारतीय चुनाव आयोग के पास होती हैं। प्रदेश स्तर, जिला स्तर एवं स्थानीय प्रशासन के अतिरिक्त सभी कर्मचारी जिला, प्रदेश तथा भारतीय चुनाव आयोग के अधीन तथा दिशा निर्देशों के अनुरूप कार्य करते हैं, ताकि लोकतन्त्र में लोगों का अटूट विश्वास बना रहे। हालांकि चुनाव के समय सभी अधिकारी एवं कर्मचारी चुनाव आयोग की शक्तियों का प्रयोग करते हैं, लेकिन अपने चुनावी कत्र्तव्यों के निर्वहन में अधिक सचेत रहते हुए तनाव में भी रहते हैं। चुनावी ड्यूटी बहुत ही सख्त एवं जवाबदेह होती है।

रिप्रेजेंटेशन ऑफ पीपल एक्ट 1951 के सेक्शन 26 के अन्तर्गत इस चुनावी प्रक्रिया में मतदान केन्द्र पीठासीन अधिकारी की नियुक्ति की जाती है। इस प्रावधान के सेक्शन 28 के अन्तर्गत पीठासीन अधिकारी का मतदान केन्द्र में स्वतन्त्र, निष्पक्ष तथा पारदर्शी चुनाव करवाने का दायित्व होता है। इसके अतिरिक्त अतिरिक्त पीठासीन अधिकारी तथा मतदान अधिकारियों की भूमिका चुनाव प्रक्रिया को सफलतापूर्वक संपन्न करवाने में महत्वपूर्ण होती है। चुनावों से पूर्व, चुनावों के दौरान तथा चुनावों के बाद चुनाव प्रक्रिया तथा आयोजन को बेहतर बनाने के लिए चुनाव आयोग द्वारा समय-समय पर अनेकों परिवर्तन किए जाते हैं। इसके बावजूद अभी भी भारतीय चुनाव व्यवस्था में मूलभूत संसाधनों तथा मानवीय संसाधनों की बहुत कमी है। सभी विभागों के कर्मचारियों की प्रतिनियुक्ति से चुनाव ड्यूटी का काम चलाया जाता है। चुनाव आयोग अपनी आवश्यकता के अनुसार सभी भौतिक संसाधनों तथा मानवीय संसाधनों को अपने नियंत्रण में करता है। इस समय चुनावी ड्यूटी से सभी कर्मचारी बचने का प्रयास कर दबाव तथा तनाव में रहते हैं। आम तौर पर सभी विभागों के आहरण एवं वितरण अधिकारी अपने अधीन कार्यरत कर्मचारियों की दक्षता, योग्यता तथा प्रबंधन कौशल का आकलन अपनी वार्षिक गोपनीय रिपोर्ट में करते हैं। लेकिन आश्चर्य है कि कर्मचारी की इस महत्वपूर्ण चुनावी ड्यूटी का उल्लेख किसी भी दस्तावेज में नहीं होता। हालांकि चुनावी प्रक्रिया में कोई भी गलती होने पर कर्मचारी पर सख्त कानूनी कार्रवाई का प्रावधान रहता है। कर्मचारी पर किसी भी लापरवाही के लिए चुनाव आयोग किसी भी प्रकार की कार्रवाई कर सकता है, जहां उसकी नौकरी तक भी खतरे में हो सकती है। जहां इस कत्र्तव्य निर्वहन में कड़ी सजा का प्रावधान है,

वहीं आवश्यक यह भी कि इस महत्वपूर्ण चुनावी ड्यूटी का कर्मचारी की सेवा पंजिका में उल्लेख होना चाहिए ताकि उसका अनुशासन, नेतृत्व क्षमता, कत्र्तव्य निर्वहन स्तर की टिप्पणी उसके पदोन्नति तथा सेवा विस्तार आदि में काम आए।

यह इसलिए भी आवश्यक है कि अमुक कर्मचारी ने कब-कब यह महत्वपूर्ण राष्ट्रीय दायित्व निभाया है क्योंकि बहुत से कर्मचारी अपने संबंधों का प्रभाव प्रयोग कर अपनी चुनावी ड्यूटियां कटवा लेते हैं। कर्मचारी की सेवा पंजिका में चुनावी ड्यूटी का उल्लेख आवश्यक रूप से पंजीकृत होना चाहिए ताकि भविष्य में यह पता चल सके कि कर्मचारी ने कब और कहां इस महत्वपूर्ण राष्ट्रीय कत्र्तव्य का निर्वहन किया है। विडम्बना है कि इस ड्यूटी की सफलता लिए शाबाशी नहीं बल्कि किसी भी विफलता तथा असफलता के लिए केवल सजा का ही प्रावधान है। इसलिए यह अनिवार्य है कि चुनावी ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी पूरी तरह से चुनाव आयोग के दिशा निर्देशों तथा नियमावली का पूर्ण रूप से अध्ययन करें। प्रत्येक अधिकारी तथा कर्मचारी को जिस भी पद या स्थान पर वह कार्यरत है, उस पर चुनाव आयोग के दिशा निर्देशों का अध्ययन कर क्रियान्वयन सुनिश्चित करना चाहिए। इसके लिए चुनाव आयोग द्वारा बेबसाइट पर, लिखित रूप से सूचनाओं तथा नियमावली की दिशा निर्देशिका छापी जाती हैं। चुनावी कत्र्तव्य का निर्वहन करने वाले प्रत्येक कर्मचारी को सफलतापूर्वक तथा सुनिश्चित करने के लिए गम्भीरतापूर्वक बार-बार अध्ययन करना चाहिए, ताकि किसी भी प्रकार की गलती की संभावना न हो। सामान्य कर्मचारी के जीवन में चुनाव आयोजित करवाना कोई आम प्रक्रिया नहीं है।

पंचायत, विधानसभा तथा लोकसभा चुनावों में चुनाव आयोग द्वारा उन्हें विभिन्न पदों पर चुनावी प्रक्रिया सम्पन्न होने तक नियुक्त किया जाता है। इस ड्यूटी के सफलतापूर्वक सम्पन्न होने पर कोई शाबाशी या प्रशस्ति पत्र नहीं मिलता, बल्कि आपके द्वारा चूक होने पर आपके खिलाफ सख्त कार्रवाई आवश्यक रूप से हो सकती है। यद्यपि चुनाव आयोग द्वारा ड्यूटी पर तैनात कर्मचारियों की सुविधा के लिए पुख्ता प्रबंध किए जाते हैं, फिर भी किसी भी समय, स्थान एवं परिस्थिति में चुनावी ड्यूटी पर कार्यरत कर्मचारी को किसी भी कीमत पर अपने कत्र्तव्यों का निर्वहन सफलतापूर्वक सुनिश्चित करना अपेक्षित होता है। आवश्यक यह है कि चुनाव ड्यूटी पर तैनात प्रिजाइडिंग आफिसर, पोलिंग आफिसर, सेक्टर आफिसर या किसी भी स्तर पर कार्यरत कर्मचारी-अधिकारी को सतर्क, सचेत होकर चुनाव आयोग के दिशा निर्देशों के अनुसार ही कार्य करना चाहिए। इस प्रक्रिया में हर समय नियमों के दायरे में रहते हुए अपने स्तर पर कत्र्तव्यों को सुनिश्चित करने के लिए कुशलतापूर्वक सफल प्रबंधन करना चाहिए तथा अपनी मनमर्जी से बचना चाहिए। चुनाव ड्यूटी पर तैनात कर्मचारी तथा अधिकारी अपने सफल दायित्वों के निर्वहन के लिए जबावदेह होता है। चुनाव प्रक्रिया बिना पक्षपात, बिना भय, बिना भेदभाव तथा पारदर्शी तरीके से सम्पन्न हो, इसी में ही चुनाव अधिकारी तथा चुनाव आयोग की सफलता है।

प्रो. सुरेश शर्मा

जय मां भारती

अशोक गौतम

हफ्ता पहले तक वे भले चंगे ठीक ही थे। पर पता नहीं क्यों, कैसे, अचानक किसकी प्रेतछाया से उनके दिमाग पर अपना अभिनंदन ग्रंथ छपवाने का भूत सवार हो गया और उनकी आत्मा अभिनंदन ग्रंथ! अभिनंदन ग्रंथ पुकारने लगी चातक की तरह। इस समस्या की दिमागपूर्ति के लिए उन्होंने अपने शिष्यों की आपातकालीन बैठक बुलाई। जब उन्हें लगा कि इस बैठक में उनके लगभग सारे चेले चपाटे पधार चुके हैं तो अपने चेले चपाटों की हाजिरी लेने के बाद उन्होंने अपने चेले चपाटों को पल पल बदलती मुद्राएं बनाते संबोधित करना शुरू किया, 'हे मेरे मठ के होनहार, पुरस्कार मार मेरे प्रिय चेले चपाटो! तुम्हारे श्री श्री गुरुजी महाराज ने यह आपातकालीन बैठक इसलिए बुलाई है कि पता नहीं वे क्यों चाहते हैं कि तुम सब मिलकर उन पर अभिनंदन ग्रंथ लिखो, छापो। ऐसा अभिनंदन ग्रंथ जैसा कि आज तक किसी पर भी किसी के चेलों ने न लिखा हो और भविष्य में भी लिखने का दुस्साहस न करें। मुझ पर तुमने ग्रंथ तो बहुत लिखे, पर अभिनंदन ग्रंथ नहीं लिखा। जब तक चेले अपने गुरु पर अभिनंदन ग्ंरथ नहीं लिखते, तब तक उनके गुरु को मोक्ष नहीं मिलता। जब तक चेले अपने गुरु पर अभिनंदन ग्ंरथ नहीं लिखते, तब तक उनकी आत्मा दूसरों के अभिनंदन ग्रंथों पर मंडराती रहती है। इसलिए अन्य गुरुओं की तरह मेरे उदर में लालसा जागी है कि तुम मुझ पर अभिनंदन ग्रंथ लिखो। मुझ पर लिखे मेरे अभिंनदन ग्रंथ का तुम्हारी गुरु मां के कर कमलों द्वारा लोकार्पण हो। कोई भी गुरु तब तक वंदनीय नहीं होता जब तक उसके अभिनंदन ग्रंथ का अपने चेले चपाटों की गुरु मां के कर कमलों द्वारा लोकार्पण नहीं होता। तुम्हें यह बताते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है कि अपने पर लिखे अभिनंदन ग्रंथ के प्रकाशन का खर्चा मैं अपने चेलों पर कतई नहीं डालूंगा।

उसके प्रकाशन का सारा खर्चा तुम्हारा ये गुरु अपनी जेब से वहन करेगा ताकि आने वाले समय में गुरु मुझसे सबक सीख सकें। हे मेरे चेलो! सावधान! मेरे अभिनंदन ग्रंथ के लिए मुझ पर मेरे चेलों द्वारा एक एक आलेख लिख देने से काम नहीं चलेगा। इसके लिए उन्हें पांच पांच, सात सात आलेख छद्मों नामों से लिखने होंगे। मैं चाहता हूं कि मेरे अभिनंदन ग्रंथ का भार मेरे जितना नहीं तो कम से कम मेरी एक जांघ जितना तो जरूर हो ताकि दूसरे मठों के गुरुओं को पता चले कि मेरे चेले किसी से कम नहीं। उनमें मेरे प्रति जो श्रद्धा है, वह अकल्पनीय है। मैंने यह भी तय किया है कि मेरे अभिनंदन ग्रंथ में कम से कम पांच सौ पेज हों। उसके संपादन का विशेष जिम्मा मैं अपने मुंह बोले पुत्र राम पाल को सौंपता हूं। उसके पास चोरे गए आलेखों को मौलिक बनाने की अद्भुत कला है। टाइपिंग का जिम्मा मैं अपने होनहार शिष्य सत्यप्रकाश को सौंपता हूं। मुझे विज्ञ सूत्रों से पता चला है कि वह गजब का कंप्यूटर फ्रेंडली है। तो हे मेरे चेलो! तुम्हारे गुरु का फौरी आदेश है कि तुम दिन-रात एक करके मुझ पर एक से एक हूदा बेहूदा लेख लिखने का आज से ही आरंभ नहीं, शुभारंभ कर दो। मैं चाहता हूं कि आज से एक महीने बाद मेरे अभिनंदन ग्रंथ का हर सूरत में लोकार्पण हो जाना चाहिए।

वैसे तो मैं भी अपने पर छद्म नामों से लेख लिखूंगा ही, पर मेरे लिखने की अब सीमा है। मेरे हाथ लिखते हुए कांपते हैं। मेरी जीभ पढ़ाते हुए कांपती है। और मैं नहीं चाहता कि अपने कांपते हुए हाथों से मैं अपने पर कांपता हुआ लिखूं। मुझे आशा ही नहीं पूरा विश्वास है कि तुम मुझ पर एक से एक हैरतअंगेज लेख लिख अपने को कृतार्थ करोगे। अभिनंदन ग्रंथ के आलेखों का रूप प्रारूप क्या रहेगा, इसके लिए मैंने हर शिष्य के लिए हिंदी साहित्य के सर्वोत्तम अभिनंदन ग्रंथ की एक एक प्रति खरीद कर लाई है। इस अभिनंदन ग्ंरथ की कापी करते हुए तुम मुझ पर इससे भी उम्दा अभिनंदन ग्रंथ तैयार करोगे, ऐसा तुम्हारे गुरु का मानना है। आज की बैठक यहीं समाप्त होती है। अगली बैठक हम हफ्ते बाद फिर इतने ही बजे, यहीं करेंगे और तब मेरा हर चेला दो-दो आलेख गुरुदक्षिणा में मेरे चरणों में चढ़ाएगा। तब तक के लिए तुम्हारे गुरु की परमिशन से बैठक स्थगित की जाती है। अगली बैठक में मेरा हर चेला मुझ पर लिखे आलेखों की कसौटी पर चौबीस कैरेट खरा उतरेगा, इसी विश्वास के साथ जय मां भारती!'

देश में लगातार बढ़ रहा है पॉवर कंजम्प्सन, अप्रैल में 11 प्रतिशत बढ़कर 144.89 अरब यूनिट

देश में बिजली खपत को लेकर बिजली मंत्रालय द्वारा हर महीने आंकड़ें जारी होते हैं। इन आंकड़ों के अनुसार अप्रैल में एक साल पहले की तुलना में लगभग 11 प्रतिशत बढ़कर 144.25 बिलियन यूनिट (बीयू) हो गई। इसकी मुख्य वजह तापमान में वृद्धि है। वहीं अप्रैल 2023 में बिजली की खपत 130.08 बीयू थी। बिजली मंत्रालय ने गर्मियों के दौरान लगभग 260 गीगावॉट की चरम मांग का अनुमान लगाया है।

नई दिल्ली। हर महीने बिजली खपत को लेकर आंकड़े जारी होते हैं। आज अप्रैल में हुए बिजली खपत को लेकर आंकड़े जारी हो गए हैं। इन आंकड़ो के अनुसार भारत की बिजली खपत अप्रैल में एक साल पहले की तुलना में लगभग 11 प्रतिशत बढ़कर 144.25 बिलियन यूनिट (बीयू) हो गई। इसकी मुख्य वजह तापमान में वृद्धि है।

सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2023 में बिजली की खपत 130.08 बीयू थी। एक दिन में उच्चतम आपूर्ति (पीक पावर डिमांड) भी अप्रैल 2024 में बढ़कर 224.18 गीगावॉट हो गई, जबकि अप्रैल 2023 में यह 215.88 गीगावॉट थी।

बिजली मंत्रालय ने गर्मियों के दौरान लगभग 260 गीगावॉट की चरम मांग का अनुमान लगाया है। विशेषज्ञों ने कहा कि बिजली की खपत में वृद्धि के साथ-साथ मांग में वृद्धि मुख्य रूप से तापमान में वृद्धि और इस्पात और बिजली जैसे सेक्टर में औद्योगिक गतिविधियों में वृद्धि के कारण हुई।

उन्होंने कहा कि गर्मी की शुरुआत के साथ बिजली की मांग के साथ-साथ खपत में भी मजबूत वृद्धि जारी रहेगी।

पिछले साल कितनी थी बिजली की खपत

बिजली मंत्रालय ने अनुमान लगाया था कि 2023 में गर्मियों के दौरान देश की बिजली की मांग 229 गीगावॉट तक पहुंच जाएगी, लेकिन बेमौसम बारिश के कारण अप्रैल-जुलाई में यह अनुमानित स्तर तक नहीं पहुंच पाई। हालाँकि, पीक सप्लाई जून में 224.1 गीगावॉट की नई ऊंचाई को छू गई, लेकिन जुलाई में गिरकर 209.03 गीगावॉट पर आ गई।

पिछले साल अगस्त 2023 में अधिकतम मांग 238.82 GW तक पहुंच गई, जबकि सितंबर में यह 243.27 GW, अक्टूबर में 222.16 GW, नवंबर में 204.77 GW, दिसंबर 2023 में 213.79 GW, जनवरी 2024 में 223.51 GW और फरवरी 2024 में 222.72 GW थी।

उद्योग विशेषज्ञों ने कहा कि व्यापक वर्षा के कारण 2023 में मार्च, अप्रैल, मई और जून में बिजली की खपत प्रभावित हुई। अगस्त, सितंबर और अक्टूबर में बिजली की खपत बढ़ी, जिसका मुख्य कारण आर्द्र मौसम और त्योहारी सीजन से पहले औद्योगिक गतिविधियों में तेजी है।

विदेशी निवेशकों ने लगातार दो महीने के निवेश के बाद बेचे इक्विटी, अप्रैल में 8,600 करोड़ रुपये के बेचे शेयर

FPI Data फरवरी और मार्च में विदेशी निवेशकों ने लगातार निवेश किया था पर अप्रैल महीने में एफपीआई द्वारा जारी निवेश पर ब्रेक लग गया है। एफपीआई (FPI) ने अप्रैल में 8700 करोड़ रुपये की भारतीय इक्विटी बेच दी। इसकी वजह मॉरीशस के साथ भारत की कर संधि में बदलाव है। एफपीआई ने इक्विटी के अलावा डेट मार्केट से 10949 करोड़ रुपये निकाले।

नई दिल्ली। विदेशी निवेशक ने अप्रैल में इक्विटी बेची है। इससे पहले उन्होंने लगातार दो महीनों तक निवेश किया था। मॉरीशस के साथ भारत की कर संधि में बदलाव और अमेरिकी बांड पैदावार की चिंता की वजह से एफपीआई (FPI) ने अप्रैल में 8,700 करोड़ रुपये की भारतीय इक्विटी बेच दी।

डिपॉजिटरी के आंकड़ों से पता चलता है कि यह मार्च में 35,098 करोड़ रुपये और फरवरी में 1,539 करोड़ रुपये के चौंका देने वाले निवेश के बाद आया है। कुल मिलाकर वर्ष 2024 में अब तक इक्विटी में कुल निवेश 2,222 करोड़ रुपये और डेट मार्केट में 44,908 करोड़ रुपये रहा।

इन आंकड़ों के अनुसार विदेशी पोर्टफोलियो निवेशकों (एफपीआई) ने भारतीय इक्विटी में 8,671 करोड़ रुपये की शुद्ध निकासी की।

स्मॉलकेस मैनेजर और फिडेलफोलियो के संस्थापक किसलय उपाध्याय ने कहा यह बहिर्वाह मार्च में भारी प्रवाह के बाद समायोजन, दर में कटौती की प्रत्याशा में लंबी अवधि के बांड में अल्पकालिक लाभ की संभावना और चुनाव परिणामों की घोषणा तक निवेशकों द्वारा अपनाए गए 'प्रतीक्षा करें और देखें' मोड के कारण था।

मॉर्निंगस्टार इन्वेस्टमेंट रिसर्च इंडिया के एसोसिएट डायरेक्टर - मैनेजर रिसर्च, हिमांशु श्रीवास्तव ने कहा

जबकि द्वीप राष्ट्र के माध्यम से भारत में किए गए निवेश पर मॉरीशस के साथ भारत की कर संधि में बदलाव विदेशी निवेशकों को परेशान कर रहा है, अनिश्चित मैक्रो और ब्याज दर दृष्टिकोण के साथ वैश्विक बाजारों से कमजोर संकेत उभरते बाजार इक्विटी के लिए अच्छे संकेत नहीं हैं। इससे संभवतः विदेशी निवेशकों को इंतजार करो और देखो का रुख अपनाने के लिए प्रेरित किया होगा।

इक्विटी बाजारों में सभी एफपीआई की बिक्री घरेलू संस्थागत निवेशकों (डीआईआई), एचएनआई (हाई नेटवर्थ इंडिविजुअल्स) और खुदरा निवेशकों द्वारा अवशोषित की जा रही है। यही एकमात्र कारक है जो एफपीआई की बिक्री पर हावी हो सकता है।

जियोजित फाइनेंशियल सर्विसेज के मुख्य निवेश रणनीतिकार वी के विजयकुमार ने कहा

समीक्षाधीन महीने के दौरान एफपीआई ने इक्विटी के अलावा डेट मार्केट से 10,949 करोड़ रुपये निकाले। इक्विटी और डेट दोनों में इस नए सिरे से एफपीआई की बिक्री के लिए ट्रिगर, अमेरिकी बॉन्ड यील्ड में निरंतर वृद्धि है। 10-वर्षीय बॉन्ड यील्ड अब लगभग 4.7 प्रतिशत है जो विदेशी निवेशकों के लिए बेहद आकर्षक है।

इस आउटफ्लो से पहले विदेशी निवेशकों ने मार्च में 13,602 करोड़ रुपये, फरवरी में 22,419 करोड़ रुपये और जनवरी में 19,836 करोड़ रुपये का निवेश किया था. यह प्रवाह जेपी मॉर्गन सूचकांक में भारतीय सरकारी बांडों के आगामी समावेशन से प्रेरित था।

जेपी मॉर्गन चेज़ एंड कंपनी ने पिछले साल सितंबर में घोषणा की थी कि वह जून 2024 से अपने बेंचमार्क उभरते बाजार सूचकांक में भारत सरकार के बांड को शामिल करेगी। इस ऐतिहासिक समावेशन से अगले 18 से 24 महीनों में लगभग 20-40 बिलियन अमरीकी डालर आकर्षित करके भारत को लाभ होने का अनुमान है।

कोटक महिंद्रा बैंक के मैनेजिंग डायरेक्टर केवीएस मैनन ने दिया इस्तीफा, 29 साल से ज्यादा किया था काम....

परिवहन विशेष न्यूज

कोटक महिंद्रा बैंक ने मंगलवार को घोषणा की कि बैंक के संयुक्त प्रबंध निदेशक केवीएस मणियन ने तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दे दिया है। कोटक महिंद्रा बैंक के संयुक्त प्रबंध निदेशक मणियन निजी क्षेत्र के अनुभवी ऋणदाता हैं। मणियन को इस साल जनवरी में प्रबंधन फेरबदल में पदोन्नत किया गया था। बैंक की ओर से मणियन के भविष्य के प्लान के बारे में जानकारी नहीं दी गई है।

नई दिल्ली। कोटक महिंद्रा बैंक ने मंगलवार को घोषणा की कि बैंक के संयुक्त प्रबंध निदेशक केवीएस मणियन (joint managing director K V S Manian) ने तत्काल प्रभाव से इस्तीफा दे दिया है।

कोटक महिंद्रा बैंक के संयुक्त प्रबंध निदेशक मणियन निजी क्षेत्र के अनुभवी ऋणदाता हैं। मणियन को इस साल जनवरी में प्रबंधन फेरबदल में पदोन्नत किया गया था।

RBI ने लगाए थे हाल ही में प्रतिबंध

यह खबर आरबीआई द्वारा ऋणदाता पर गंभीर व्यावसायिक प्रतिबंध लगाने के कुछ दिनों बाद आई है। मालूम हो कि बैंक के टेक आर्टिटेक्चर में खामियों के चलते आरबीआइ ने बैंक को नए क्रेडिट कार्ड बेचने पर रोक लगा दी है।

क्यों दिया मणियन ने पद से इस्तीफा

बैंक की ओर से दी गई स्टेटमेंट के मुताबिक, उपभोक्ता, वाणिज्यिक, थोक और निजी बैंकिंग सहित विभिन्न व्यवसायों का नेतृत्व करने वाले मणियन ने तत्काल प्रभाव से अपने पद से इस्तीफा दे दिया है। हालांकि, बैंक की ओर से मणियन के भविष्य के प्लान और इस्तीफा देने के कारणों के बारे में जानकारी नहीं दी गई है। उनकी पदोन्नति से कुछ दिन पहले, मीडिया रिपोर्ट्स का दावा था कि मणियन एक छोटे प्रतिद्वंद्वी बैंक के प्रमुख बनेंगे।

मणियन के बारे में पहले अटकलें थीं कि वे कोटक महिंद्रा बैंक के सीईओ और एमडी के रूप में उदय कोटक की जगह लेंगे।

मणियन की जगह कौन करेगा काम

मंगलवार को, कोटक महिंद्रा बैंक (Kotak Mahindra Bank) ने कहा कि उसके उप प्रबंध निदेशक शांति एकंबरम (deputy managing director Shanti Ekambaram) निवेश बैंकिंग और संस्थागत इक्विटी और परिसंपत्ति पुनर्निर्माण व्यवसायों की देखरेख करेंगे, जिनकी देखरेख मणियन करते थे। जबकि बैंक के नए एमडी और सीईओ अशोक वासवानी (newly appointed MD and CEO Ashok Vaswani) थोक, वाणिज्यिक की देखरेख करेंगे। बैंक सीधे उन्हें ही रिपोर्ट करेगा।

अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए दूसरे घरों की तलाश कर रहे लोग, आवासीय संपत्तियों की मजबूत मांग का मिल रहा संकेतः रिपोर्ट

परिवहन विशेष न्यूज

लोग अपनी बढ़ती ज़रूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए दूसरे घरों की तलाश कर रहे हैं या अपने मौजूदा घरों को बदलकर बड़े घरों में अपग्रेड कर रहे हैं। यह ट्रेंड महानगरों तक ही सीमित नहीं है बल्कि छोटे शहरों और लखनऊ जयपुर और इंदौर जैसे महत्वपूर्ण टियर-2 शहरों में भी दिखाई देता है। Housing.com द्वारा 2022 में ऑनलाइन प्रॉपर्टी सर्च ट्रेंड्स पर एक सर्वे किया गया है।

नई दिल्ली। आवासीय संपत्तियों को लेकर लोगों की मानसिकता सकारात्मक बनी हुई है। किफायती आवासों के साथ-साथ 1 करोड़ रुपये से अधिक कीमत वाले महंगे अपार्टमेंट के ऑनलाइन सर्च में काफी वृद्धि हुई है।

घरों की तलाश कर रहे हैं लोग

लोग अपनी बढ़ती ज़रूरतों और आकांक्षाओं को पूरा करने के लिए दूसरे घरों की तलाश कर रहे हैं या अपने मौजूदा घरों को बदलकर बड़े घरों में अपग्रेड कर रहे हैं।

यह ट्रेंड महानगरों तक ही सीमित नहीं है, बल्कि छोटे शहरों और लखनऊ, जयपुर और इंदौर जैसे महत्वपूर्ण टियर-2 शहरों में भी दिखाई देता है।

Housing.com द्वारा 2022 में ऑनलाइन प्रॉपर्टी सर्च ट्रेंड्स पर किए गए नवीनतम क्रॉस-कंट्री सर्वे में सामने आई जानकारी रियल एस्टेट उद्योग के साथ-साथ घरों के खरीदारों के लिए भी अच्छा संकेत देते हैं।

सर्वे के मुताबिक, ऑनलाइन सर्च के वॉल्यूम में, 1 से 2 करोड़ रुपये के बीच की कीमत वाली रेज़िडेंशियल यूनिट्स की मांग में सालाना आधार पर 24% से अधिक की वृद्धि हुई।

इसमें चालू वर्ष और उसके बाद के वर्षों में भी आवासीय संपत्ति बाज़ार को आगे बढ़ाने की क्षमता है।

Housing.com के बिज़नेस हेड, अमित मसलदान कहते हैं कि डेवलपर्स को उचित लागत और उपयुक्त स्थानों पर हाई-एंड रेज़िडेंशियल अपार्टमेंट की मांग को पूरा करने के लिए इस अवसर का लाभ उठाना चाहिए।

संपत्ति के लिए ऑनलाइन सर्च में मुंबई सबसे आगे

2022 के दौरान संपत्तियों के लिए ऑनलाइन सर्च ट्रैफिक में ठाणे वेस्ट (मुंबई) सबसे आगे था, इसके बाद व्हाइटफ़ील्ड (बेंगलुरु) और ग्रेटर नोएडा वेस्ट (दिल्ली एनसीआर) का स्थान था।

इन जगहों के अलावा, न्यू टाउन (कोलकाता), मीरा रोड ईस्ट (मुंबई), चांदखेड़ा (अहमदाबाद), वाकड़ (पुणे), खारघर (पुणे), गोटा (अहमदाबाद) और वस्त्राल (अहमदाबाद) में भी संपत्तियों को लेकर काफी दिलचस्पी दिखाई गई।

ऐसी संभावना जताई जा रही है कि आने वाले समय में इन शीर्ष दस स्थानों पर काफी मांग देखने को मिल सकती है, जो समय बीतने के साथ गति पकड़ सकती है।

आवासीय सोसायटी की मांग केवल महानगरों तक ही सीमित नहीं रहेगी, बल्कि टियर-2 शहरों में भी इसी प्रकार की मांग देखी जाएगी।

इन शहरों में, जो महानगरों के साथ तेज़ी से कदमताल कर रहे हैं, घरों के खरीदारों ने इंडिपेंडेंट हाउस के बजाय अपार्टमेंट्स में दिलचस्पी दिखाना शुरू कर दिया है, जिससे डेवलपर्स और रियलिटी एजेंट्स के लिए बड़े अवसर खुल रहे हैं।

टियर-2 शहरों में, आवासीय सोसायटी को ऑनलाइन सर्च करने के मामले में लखनऊ शीर्ष स्थान पर है, इसके बाद जयपुर और इंदौर हैं।

बेहतर जीवन, सुरक्षा और अपार्टमेंट सोसायटी में मिलने वाली सामान्य मनोरंजक सुविधाओं के कारण, इंडिपेंडेंट हाउस की तुलना में अपार्टमेंट को प्राथमिकता दी जाती है।

नए अपार्टमेंट्स के ऑनलाइन सर्च में भी आ रही वृद्धि

नए अपार्टमेंट्स के ऑनलाइन सर्च में सालाना आधार पर 52% की वृद्धि हुई, जबकि रीसेल संपत्तियों के ऑनलाइन सर्च में 2% की गिरावट आई।

2022 में, 3बीएचके और उससे बड़ी संपत्तियों के ऑनलाइन सर्च में 1.4 गुना की वृद्धि हुई, जो भविष्य में आवासीय रियल एस्टेड क्षेत्र में मांग बढ़ने का संकेत देती है।

इस सर्वे से सामने आए हाउसिंग सेक्टर के ऑनलाइन सर्च से संबंधित ये मौलिक ट्रेंड्स, घरों के खरीदारों की बढ़ती दिलचस्पी को दर्शाते हैं।

एनपीएस के नियमों में हुआ बदलाव, आपका भी है अकाउंट तो जानें क्या है नया रूल

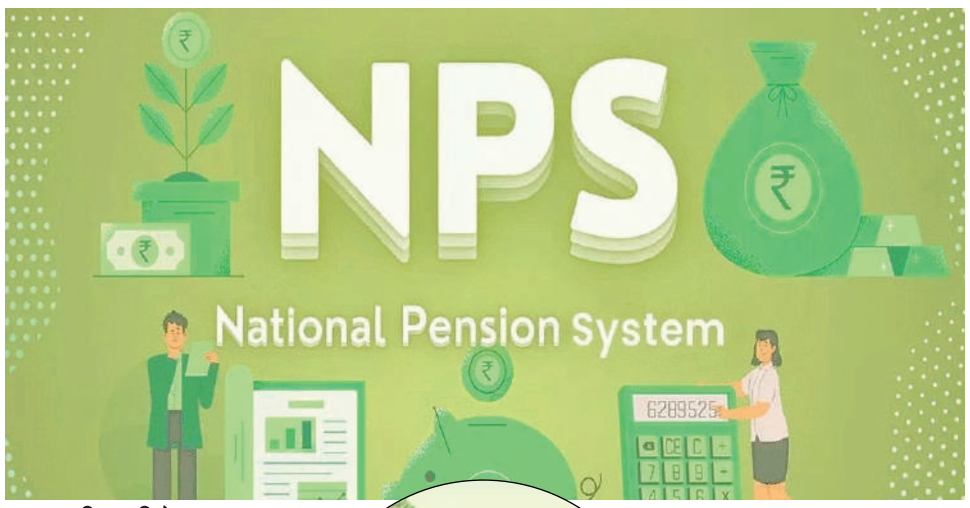

परिवहन विशेष न्यूज

PoP Charges are Changed पेंशन का लाभ पाने के लिए कई लोग नेशनल पेंशन स्कीम (NPS) में निवेश करते हैं। बता दें कि एनपीएस के नियमों में बदलाव हुआ है। दरअसल एनपीएस अकाउंट में लगने वाले पीओपी चार्ज के स्ट्रक्चर में बदलाव किया है। अगर आप भी एनपीएस में निवेश करते हैं तो यह आर्टिकल बहुत जरूरी है। चलिए जानते हैं कि पीओपी क्या होता है।

नई दिल्ली। रिटायरमेंट के बाद पेंशन (Pension) इनकम का अच्छा सोर्स होता है। वर्तमान में पेंशन का लाभ पाने के लिए कई स्कीम मौजूद है। इन स्कीम में एक नेशनल पेंशन स्कीम (National Pension Scheme) भी है। इसमें निवेश राशि के मैच्योर हो जाने के बाद निवेशक को पेंशन का लाभ मिलता है।

अगर आप भी एनपीएस में निवेश करते हैं यानि कि आपके पास एनपीएस अकाउंट (NPS Account) है तो बता दें कि आज से एनपीएस अकाउंट पर लगने वाले PoP चार्ज स्ट्रक्चर में बदलाव हुआ है।

पेंशन फंड रेग्युलेटरी एंड डेवलेपमेंट अथॉरिटी (PFRDA) जो कि एनपीएस को रेग्युलेट करती है उन्होंने प्वाइंट ऑफ प्रेजेंस (PoP) के चार्ज स्ट्रक्चर में बदलाव किया है। प्वाइंट ऑफ प्रेजेंस चार्ज से जुड़े नियमों में हुए बदलाव को लेकर पीएफआरडीए ने सर्कुलर जारी किया है।

क्या होता है PoP

एनपीएस अकाउंट सुचारू रूप से चले इसकी जिम्मेदारी PoP की होती है। PoP की नियुक्ति पीएफआरडीए ही करता है। PoP एक तरह का नेटवर्क है। इस नेटवर्क के जरिये कस्टमर और एनपीएस आपस में कनेक्ट होते हैं। PoP अपनी सर्विस को देने के लिए फीस लेता है। PoP के चार्ज की कोई लिमिट नहीं होती है। हालांकि, अब इसके चार्ज की मिनिमम और मैक्सिमम लिमिट तय हो गई है।

क्या है PoP की दरें

जब कोई निवेशक पहली बार एनपीएस में रजिस्ट्रेशन करता है तो उसे 200 से 400 रुपये तक का PoP देना होगा। इसके बाद निवेशक को 0.50 फीसदी का कंट्रीब्यूशन देना होगा। यह चार्ज 30 से 25 हजार रुपये के बीच ही रहता है। इसके अलावा सभी नॉन-फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन पर 30 रुपये का चार्ज लगता है।

एनपीएस स्कीम के बारे में

एनपीएस स्कीम टैक्स सेविंग स्कीम (Tax Saving Scheme) है। इसमें 60 साल की उम्र के बाद निवेशक को निवेश की गई राशि का एक हिस्सा मिलता है और दूसरा हिस्सा पेंशन के तौर पर मिलता है। देश के सभी बैंक में एनपीएस स्कीम का लाभ मिलता है। इस स्कीम में 18 से 60 साल के बीच ही आवेदन किया जाता है।

सात ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए आईआरसीटीसी का बेहतरीन टूर पैकेज

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। श्रवण कुमार अपने अंधे माता पिता का बोझ कंधे पर लाद उन्हें भ्रमण पर ले गए थे। हालांकि अब अगर माता पिता को तीर्थ यात्रा पर ले जाना हो तो बोझ कंधे पर नहीं जेब पर पड़ सकता है। देश में कई तीर्थ स्थल हैं, जो कश्मीर से कन्याकुमारी तक फैले हैं। इन तीर्थ स्थलों की यात्रा पर जाना तो आसान है लेकिन खर्च अधिक होने की संभावना के कारण योजना टलती रह जाती है। आईआरसीटीसी समय-समय पर कई टूर पैकेज लेकर आता है, जो बजट में आपको देश दुनिया की सैर कराते हैं। आईआरसीटीसी मंदिरों की यात्रा पर भी ले जाता है। इस गर्मियों की छुट्टियों में सात ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए अपने माता पिता को ले जा सकते हैं। सात ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए आईआरसीटीसी बेहतरीन टूर पैकेज लेकर आ रहा है। आइए जानते हैं ज्योतिर्लिंगों की यात्रा के टूर पैकेज की पूरी जानकारी आईआरसीटीसी द्वारा ज्योतिर्लिंग दर्शन की शुरुआत योग नगरी ऋषिकेश रेलवे स्टेशन से होगी। भारत गौरव पर्यटक ट्रेन के जरिए 7 ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए ले जाया

जाएगा। यात्री ऋषिकेश, हरिद्वार, मुरादाबाद, बरेली, शाहजहांपुर, हरदोई, लखनऊ, कानपुर, उरई, वीरांगना लक्ष्मीबाई, ललितपुर से यात्रा में शामिल हो सकते हैं। किन ज्योतिर्लिंगों के दर्शन मिलेंगे यात्रा के दौरान ओंकारेश्वर, महाकालेश्वर, सोमनाथ, भेंट द्वारका, द्वारकाधीश मंदिर, नागेश्वर, त्र्यंबकेश्वर, घृष्णेश्वर और भीमाशंकर ज्योतिर्लिंग के दर्शन कराए जाएंगे। सुविधा इस टूर पैकेज में 2 एसी, 3 एसी और स्लीपर क्लास यात्रा, नाश्ता और दोपहर व रात का शाकाहारी भोजन, स्थानीय जगहों पर ले जाने के लिए एसी/नॉन एसी बस शामिल हैं। कब से शुरू हो रही यात्रा टूर पैकेज की शुरुआत 22 मई 2024 से 2 जून 2024 तक होगी। टूर पैकेज 11 रातों और 12 दिनों का होगा ,जिसमें उत्तराखंड के ऋषिकेश से मध्य प्रदेश, महाराष्ट्र के ज्योतिर्लिंगों के दर्शन के लिए ले जाया जाएगा। तीर्थ यात्रा का खर्च यात्रा के दौरान स्लीपर क्लास के लिए एक/दो या तीन व्यक्तियों के साथ ठहरने पर 22150 रुपये प्रति व्यक्ति और बच्चे (5 से 11 वर्ष) का टिकट मूल्य 20800 रुपये खर्च करना होगा। 3एसी यात्रियों के लिए 36700 प्रति व्यक्ति व 2एसी यात्रियों को 48600 रुपये प्रति व्यक्ति व्यय करने पड़ सकते हैं। आप चाहें तो टूर पैकेज के टिकट व्यय को ईएमआई में दे सकते हैं। प्रतिमाह 1074 रुपये की ईएमआई की सुविधा भी मिल रही है।

चारधाम यात्रा मार्ग पर जीएमवीएन के गेस्ट हाउस मई-जून तक हाउसफुल, 13 करोड़ की हुई बुकिंग

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। दस मई से शुरू होने जा रही उत्तराखंड चारधाम यात्रा 2024 को लेकर प्रदेश के पर्यटन विभाग ने भी अपनी सभी तैयारियां लगभग पूरी कर ली हैं. गढ़वाल मंडल विकास निगम के गेस्ट हाउस के पास भी 13 करोड़ रुपए की एडवांस बुकिंग आ चुकी है. अगले दो महीने के लिए जीएमवीएन के सभी गेस्ट हाउस लगभग फुल हो चुके हैं. चारधाम यात्रा को लेकर गढ़वाल मंडल विकास निगम की क्या तैयारी है, इसी को लेकर ईटीवी भारत ने जीएमवीएन ने मैनेजिंग डायरेक्टर आईएएस अधिकारी विनोद गोस्वामी से खास बातचीत की.

मैनेजिंग डायरेक्टर विनोद गोस्वामी ने बताया कि जीएमवीएन ने सभी गेस्ट हाउस को उत्तराखंडी थीम पर सजाया है. गढ़वाल मंडल विकास निगम के गेस्ट हाउस में ठहरने वाले पर्यटकों को प्राइवेट होटलों की तुलना में कम पैसे देने होते हैं और उन्हें सुविधाएं भी ज्यादा मिलती हैं. साथ ही गढ़वाल मंडल विकास निगम ने इस बार सस्टेनेबल इको फ्रेंडली टूरिज्म को बढ़ावा देने के लिए कई नए बदलाव किए हैं. उत्तराखंड आने वाले इलेक्ट्रिक वाहनों का ऋषिकेश से ऊपर जाना मुश्किल होता था, क्योंकि चारधाम यात्रा मार्ग पर इलेक्ट्रिक व्हीकल चार्जिंग की कोई सुविधा नहीं थी. इस बार गढ़वाल मंडल विकास निगम ने सभी गेस्ट हाउस में इलेक्ट्रिक वाहनों की चार्जिंग की सुविधा शुरू की है. इसके अलावा गढ़वाल मंडल विकास निगम के रिसेप्शन पर पर्यटकों को आसपास के सभी एक्स्ट्रा एडवेंचर टूरिज्म एक्टिविटी की जानकारी दी जाएगी. साथ ही उन्होंने कहा कि ऑनलाइन ट्रैवल एजेंसी के डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भी गढ़वाल मंडल विकास निगम सबसे कम टैरिफ के विकल्प के रूप में पर्यटकों को आकर्षित कर रहा है. गढ़वाल मंडल विकास निगम ने बताया कि ऑनलाइन प्लेटफॉर्म पर मौजूद सभी बिजनेस पार्टनर की मदद से गढ़वाल मंडल विकास निगम इस बार ओटीए प्लेटफॉर्म पर भी पर्यटकों की खास पसंद बन रहा है. उन्होंने बताया कि अब तक ऑनलाइन और ऑफलाइन बुकिंग के माध्यम से गढ़वाल मंडल विकास निगम को 13 करोड़ की एडवांस बुकिंग मिल चुकी है, जो कि आगामी दो महीने के लिए पूरी तरह से हाउसफुल बुकिंग है. वहीं गेस्ट हाउस में उत्तराखंड के पर्यटन और सस्कृति की ध्यान में रखते हुए उत्पाद रखे गए हैं.

पंतजलि आयुर्वेद और दिव्य फार्मेसी के लगभग 14 उत्पादों के लाइसेंस रद्द

परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली। पतंजलि के प्रमोटर्स और योग गुरु बाबा रामदेव की मुश्किलें कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। पहले सुप्रीम कोर्ट में भ्रामक विज्ञापन को लेकर अवमानना का केस और उसके बाद अब उत्तराखंड सरकार का लाइसेंसिंग अथॉरिटी का एक्शन जिसे लेकर इन दिनों रामदेव और बालकृष्ण की मुश्किलें बढ़ा दी हैं। सोमवार को उत्तराखंड सरकार ने बाबा रामदेव की पंतजलि आयुर्वेद और दिव्य फार्मेसी के लगभग 14 उत्पादों के लाइसेंस रद्द कर दिये। यह जानकारी सोमवार शाम को उत्तराखंड सरकार ने हलफनामा दायर करके दी। उत्तराखंड सरकार ने सोमवार को इस संबंध में बैन का आदेश भी जारी किया है। बता दें कि दिव्य फार्मेसी पंतजलि के उत्पादों का निर्माण करती है। प्रदेश की लाइसेंस अथॉरिटी ने बाबा की ब्लड प्रेशर, लिवर, गोइटर, शुगर, ब्लड प्रेशर के लिए इस्तेमाल की जाने वाली 14 दवाओं के उत्पादन को रोकने का निर्देश दिया है। आदेश जिले के सभी ड्रग इंस्पेक्टर को भी भेजा गया है। बता दें कि इस मामले में सुप्रीम कोर्ट ने राज्य की लाइसेंसिंग अथॉरिटी और आयुष मंत्रालय से जवाब मांगा था।

इन उत्पादों पर हुआ एक्शन : उत्राखंड सरकार की लाइसेंसिंग अथॉरिटी ने श्वासारि गोल्ड, श्वासारि वटी, श्वासारि प्रवाही, श्वासारि अवलेह, मुक्ता वटी एक्स्ट्रा पावर, लिपिडोम, मधुग्रिट, बीपी ग्रिट, दृष्टि आई ड्रॉप, आईग्रिट गोल्ड, लिवामृत एडवांस, मधुनाशिनी वटी जैसे उत्पाद शामिल है।

बता दें कि सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में कुछ उत्पादों के भ्रामक विज्ञापनों को रोकने के निर्देशों का पालन नहीं करने के लिए रामदेव की आलोचना भी की है। सुप्रीम कोर्ट में आज पंतजलि मामले की सुनवाई होनी है। आज कोर्ट तय करेगा कि रामदेव और बालकृष्ण के खिलाफ अवमानना का आरोप लगाया जाए या नहीं। इस मामले की पिछली सुनवाई 23 अप्रैल को हुई थी।

माफीनामे की साइज को लेकर उठाए सवाल:- पिछली सुनवाई के दौरान अखबारों में छपे माफीनामे की साइज को लेकर कोर्ट ने सवाल उठाए थे। मामले की सुनवाई करते हुए जस्टिस हिमा कोहली ने कहा कि आपके विज्ञापन के आकार के ही माफीनामे होने चाहिए। क्या ऐड का साइज भी वही था जो आज माफीनामे का है। कोर्ट ने कहा कि हम माफीनामे के विज्ञापनों की वास्तविक साइज देखना चाहते हैं, ये हमारा निर्देश है।

छत्तीसगढ़ के इन खूबसूरत हिल स्टेशनों की सैर

छत्तीसगढ़ देश का बेहद खूबसूरत राज्य है. भारत अपनी प्रचुर संपदा, प्रकृति और कई अद्भुत स्थानों के लिए दुनिया भर में प्रसिद्ध है। यह राज्य भी विशाल जंगलों से घिरा हुआ है। छत्तीसगढ़ में कई ऐसे अद्भुत और मनोरम स्थान हैं, जिनकी चर्चा पूरे देश में होती है। प्रतिदिन हजारों लोग चित्रकोट झरना, चिरमिरी या कांगेर घाटी राष्ट्रीय उद्यान देखने आते हैं। छत्तीसगढ़ के विशाल जंगलों में स्थित नेतरहाट भी कम खूबसूरत नहीं है। नेतरहाट एक हिल स्टेशन के रूप में काफी लोकप्रिय जगह मानी जाती है। इस आर्टिकल में हम आपको नेतरहाट हिल स्टेशन की कुछ खूबसूरत जगहों के बारे में बताने जा रहे हैं, जहां जाने के बाद आप हिमाचल या उत्तराखंड को भूल जाएंगे।

बेतला राष्ट्रीय उद्यान जब नेतरहाट में किसी बेहतरीन जगह पर जाने की बात आती है, तो बेतला नेशनल पार्क का नाम जरूर लिया जाता है।900 वर्ग किलोमीटर में फैला यह पार्क दुनिया भर से पर्यटकों को आकर्षित करता है। बेतला राष्ट्रीय उद्यान विशाल जंगलों से घिरा हुआ है। बेतला पार्क जंगली हाथी, बाघ, जंगली कुत्ता, हिरण आदि कई जानवरों के लिए बेहद खास पार्क माना जाता है। प्रकृति प्रेमियों के लिए यह पार्क किसी स्वर्ग से कम नहीं है। यहां कई लुप्तप्राय पौधे भी देखे जा सकते हैं। आप जंगल सफारी का भी आनंद ले सकते हैं।

ऊपरी घाघरी झरना बेतला नेशनल पार्क घूमने के बाद आप घूमने के लिए अपर घाघरी झरने तक पहुंच सकते हैं। घाघरी झरना नेतरहाट के मुख्य आकर्षणों में से एक है। ऊपरी घाघरी झरना छोटी पहाड़ियों और हरे-भरे जंगलों के बीच बसा अंतहीन सुंदरता का खजाना है। इस जगह की खूबसूरती अपने चरम पर होती है।आसपास का क्षेत्र बेहद खूबसूरत हो जाता है। इसके अलावा आप निचला घाघरी झरना भी देख सकते हैं।

मैगनोलिया पॉइंट नेतरहाट में मैगनोलिया पॉइंट एक खूबसूरत और अद्भुत जगह है। ऐसा कहा जाता है कि एक स्थानीय युवक को ब्रिटिश लड़की मैगनोलिया से प्यार हो गया और दोनों इसी जगह पर मिलते थे। इसलिए इस जगह का नाम मैगनोलिया पॉइंट भी पड़ा। मैगनोलिया पॉइंट को आसपास के इलाके में सनसेट पॉइंट के नाम से भी जाना जाता है। नेतरहाट पहुंचने वाले पर्यटक सूर्योदय और सूर्यास्त का अद्भुत नजारा देखना चाहते हैं, इसलिए सभी पर्यटक मैगनोलिया प्वाइंट पहुंचते हैं। यहां आसपास के इलाकों से बड़ी संख्या में लोग पिकनिक मनाने आते हैं।

शादी के लिए खोज रहे हैं सस्ती और खूबसूरत लोकेशन तो उत्तराखंड के यह हिल स्टेशन हो सकते हैं आपकी पंसद

कुछ लोग हिल स्टेशन पर जाने का प्लान बनाते हैं अगर आप भी हिल स्टेशन पर किसी अच्छी जगह की तलाश में हैं तो हम आपको इसके बारे में बताएंगे। आप उत्तराखंड की इन 4 जगहों को देख सकते हैं।

धनौल्टी धनोल्टी अपने दोस्तों के साथ घूमने के लिए एक अच्छी जगह है। हिमालय के बीच खूबसूरती से बसा यह शांत पहाड़ी शहर पर्यटकों के बीच प्रसिद्ध है। यहां कैंपिंग और एडवेंचर एक्टिविटीज की जा सकती हैं। आप क्रिसमस के दौरान यहां जा सकते हैं। इस समय अधिकतर होटलों या रिसॉट्र्स को खूबसूरती से सजाया जाता है। यहां कई पार्टियां भी आयोजित की जाती हैं. पओली ओली भी एक बेहतरीन विकल्प है. यहां आप क्रिसमस के मौके पर स्नोबोर्डिंग और स्कीइंग का मजा ले सकते हैं। यहां घूमने के लिए कोई खास जगह तो नहीं है, लेकिन आराम करने के लिए यह सबसे अच्छी जगह है। यहां से आप नंदा, देवी, कामेट, मान पर्वत और दूनागिरी समेत कई ऊंची हिमालयी चोटियां भी देख सकते हैं। चॉकलेट इस हिल स्टेशन का नाम

बहुत कम लोगों ने सुना होगा, लेकिन आपको बता दें, यह उन हिल स्टेशनों में से एक है जहां सूर्यास्त और सूर्योदय दोनों का खूबसूरत नजारा देखा जा सकता है। यह हिल स्टेशन देवदार, ओक और रोडोडेंड्रोन के पेड़ों, मक्के के खेतों और बगीचों से भरपूर है। यहां आपको खूबसूरत चाय के बागान देखने को मिलेंगे।

खिर्सू पौरी गढ़वाला जिले में समुद्र तल से 1700 मीटर की ऊंचाई पर स्थित खिर्सू उत्तराखंड के सबसे खूबसूरत हिल स्टेशनों में से एक है। यहां की पर्वत चोटियां ओक और देवदार के जंगलों से ढकी हुई हैं।

कभी भी छोटाबाबू बडाबाबू की कुर्शी नहीं ले पाएंगे : अपराजिता सरंगी

मनोरंजन सासमल , स्टेट हेड उडीशा

भुबनेश्वर :भुवनेश्वर की सांसद अपराजिता षाड़ंगी ने आज प्रदेश भाजपा कार्यालय में प्रेस कॉन्फ्रेंस कर राज्य सरकार और मुख्यमंत्री पर जमकर निशाना साधा ।उन्होंने कहा, ओडिशा में पिछले 24 साल से एक निष्क्रिय सरकार चल रही है । कोरोना के बाद से मुख्यमंत्री ज्यादा नजर नहीं आए हैं । मुख्यमंत्री अक्सर सचिवालय नहीं जाते हैं ।सभी विभागों के कार्यों की समीक्षा मुख्यमंत्री स्वयं करें। लेकिन ऐसा नहीं हो रहा है । इधर, मुख्यमंत्री के नहीं आने से बिजेड़ी नेता पार्टी छोड़ रहे हैं ।यहां तक कि डीजीपी और मुख्य सचिव से भी मुलाकात नहीं हो पाती । किसी भी राज्य में ऐसी अजीब व्यवस्था नहीं है ।

उन्होंने आगे कहा, एक छोटा बच्चा बड़ा बच्चा बनने की असफल कोशिश कर रहा है । बच्चा चल रहा है । वोट किये हुए नेता नहीं जा रहे हैं । मेरा अनुरोध शासन को आउटसोर्स करने का नहीं है। सभी को लगता है कि रूढ़िवाद खतरे में है। राज्य के सभी प्रमुख काम गैर-उड़िया ठेकेदारों को दिये जा रहे हैं ।छोटे-छोटे कार्यों का टेंडर कराकर कार्य कराया जाता है। रूढ़िवादी नेता मंच पर नहीं आ सकते, क्या यह अश्मिता है ? राज्य में 'लक्ष्मी' बस सेवा को बाहरी लोग क्यों समझते हैं ? अपराजिता ने पूछा कि हर साल 3 महीने इको-टूरिज्म को कौन समझता है ।भुवनेश्वर की सांसद अपराजिता षाड़ंगी ने कहा कि मुख्यमंत्री के दो सीटों से चुनाव लड़ने के बाद छोटाबाबू को पिछले दरवाजे से एंट्री दिलाने की कोशिश की गई।

जिला मेडिकल प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन अमृतसर की मासिक बैठक 'सांस और छाती संबंधी रोगों के बारे चर्चा'

अमृतसर 1मई (साहिल बेरी)

जिला मेडिकल प्रैक्टिशनर्स एसोसिएशन अमृतसर की मासिक बैठक चेयरमैन डॉ. प्रभजीत सिंह, सलाहकार सदस्य, पंजाब राज्य अल्पसंख्यक आयोग और अध्यक्ष डॉ. जसप्रीत सिंह के नेतृत्व में ओहरी अस्पताल के सहयोग से फूड फ्यूजन रेस्टोरेंट में सफलतापूर्वक आयोजित की गई। मुख्य अतिथि अमृतसर लोकसभा कांग्रेस उम्मीदवार गुरजीत सिंह औजला जी की माता जागीर कौर, उनकी धर्म पत्नी एवं पंजाब राज्य अल्पसंख्यक आयोग के सदस्य सुभाष थोबा जी विशेष रूप से उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. प्रदीप ओहरी जी ने ओहरी अस्पताल में सांस और छाती संबंधी रोगों के लिए दी जा रही आधुनिक सुविधाओं की जानकारी आये हुए डॉक्टरों से साझा की। इस अवसर पर महासचिव डॉ. प्रभ सिंह, वित्त सचिव डॉ. सुरजीत सिंह, कार्यकारी सदस्य डॉ. गुरमेज सिंह, डॉ. कुलबीर सिंह, डॉ. रछपाल सिंह, डॉ. परमिंदर सिंह, डॉ. जसबीर सिंह, डॉ. दिलबाग सिंह, डॉ. पंकज धीर, डॉ. जोबनजीत सिंह, डॉ. बलविंदर सिंह व सभी सदस्य उपस्थित थे।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023